30.00

January 2012

मरयम

हिजाब

औलाद पर हराम कमाई का असर

तौबा

कोई रिसर्च आख़िरी नहीं

दीनदारीः पार्ट–टाईम या फुल–टाईम

चेहलुम

जुहूर की निशानियां

खाने के उसूल

अली[अ०] की ज़िम्मेदार बेटी

शादी-शुदा ज़िंदगी

औरतें, जॉब, इस्लाम

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर हम अपने
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आए हैं

ख़ुशियों की सौग़ात

और शुरू कर रहे हैं

एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 ख़ुशनसीबों को मिलेंगे ख़ूबसूरत ज्वैलरी सैट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतेज़ार कीजिए अपनी बारी का।

**इस महीने जिन 5 ख़ुशनसीबों को
मरयम की तरफ़ से ख़ूबसूरत तोहफ़े दिये जा रहे हैं
उनके नाम यह हैं:**

Mr. Anjum Zaidi, Lucknow
Subscription ID: A00583

Mr. Irteza Husain, Delhi
Subscription ID: A00294

Mr. Karrar Husain, Amsin
Subscription ID: A00212

Mr. Mohd. Abbas, Banglore
Subscription ID: A00602

Mr. Sadar Alam, Patna
Subscription ID: A00159

28
SAFAR
النبي الأعظم
عظم الله أجوركم بأستشهاد رسول الله
खुदा के आख़िरी नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा स0
की वफ़ात पर हम आप सब को ताज़ियत पेश करते हैं।

January 2012

Monthly Magazine

मरयम

इस महीने आप पढ़ेंगी...

तौबा	6
औलाद पर हराम कमाई का असर	9
दीनदारीः पार्ट-टाईम या फुल-टाईम	11
कोई रिसर्च आख़िरी नहीं	13
फूल भी कांटे भी	14
अली[अ0] की ज़िम्मेदार बेटी	16
चेहलुम	18
माँ-बाप के हक़	19
हिजाब	22
शादी-शुदा ज़िंदगी	26
खुदा की राह में ख़र्च करना	28
ज़ुहूर की निशानियां	31
औरतें, जॉब, इस्लाम	34
मैं करबला में खड़ा हूं (नज़्म)	35
शेर दिल बेटी का दरबारे यज़ीद में ख़ुतबा	37
खाने के उसूल	39
रसूल[अ0] का पहला घर	40

Editor
M. Hasan Naqvi

Editorial Board
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Azmi Rizvi
Batool Azra Fatima
M. Mohsin Zaidi
Tauseef Qambar

Graphic Designer
imagine grafix
Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprieter S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017 (Lucknow), +91-9892393414 (Mumbai)
Email: maryammonthly@gmail.com

امام حسن مجتبی علیه السلام
28
SAFAR

तौबा

■ डॉ. हिना बानो तबातबाई
शिया पी. जी. कालेज, लखनऊ

तौबा ख़ुदा की रहमत का वह दरवाज़ा है कि जिस से ख़ुदा अपने उन बन्दों पर करम करता है जो गुनाहगार हैं। तौबा लफ़्ज़ पैदा ही तब होता है जब इंसान ग़लती करता है और अगर यह ग़लती अल्लाह के अहकाम में है तो इसका नाम मासियत या गुनाह हो जाता है।

ऐसा कौन सा इंसान होगा जिसे अपनी ज़िंदगी में तौबा का सहारा न लेना पड़े, चाहे वह दुनियावी काम हो या उख़रवी। मगर जब एक इंसान अपने ख़ुदा की बारगाह में तौबा का ख़्वास्तगार होता है तो उसकी शान यह होती है कि ख़ुदा के नज़दीक गुनाहगार का गिड़गिड़ाना फ़रिश्तों की तस्बीह से ज़्यादा पसंदीदा काम है।

जिस वक़्त जनाबे आदम को ख़ुदा ने जन्नत से ज़मीन पर भेजना चाहा तो आप जन्नत के लिए बेक़रार थे। आपने दुआ की कि परवरदिगार तूने शैतान को मेरी औलाद के बहकाने की छूट दे दी है, मेरी उम्मत के लिए भी कोई तोहफ़ा मुक़र्रर कर दे। क़ुदरत की आवाज़ आई कि ऐ आदम! हमने तुम्हारी उम्मत के लिए यह तोहफ़ा रखा है कि अगर इंसान नेकी करेगा तो 10 नेकियाँ लिखी जाएंगी और अगर गुनाह करेगा तो 1 ही लिखा जाएगा। जनाबे आदम कहते हैं कि परवरदिगार इससे भी ज़्यादा कुछ और मुक़र्रर फ़रमा दे। फिर क़ुदरत की आवाज़ आई कि अच्छा आदम जाओ हमने इससे भी ज़्यादा मुक़र्रर किया। अगर कोई बन्दा किसी नेकी का इरादा भी करेगा तो उसे लिख लिया जाएगा और गुनाह करने के बाद उसे कुछ देर की छूट दी जाएगी। अगर तौबा कर लेगा तो हम उसे माफ़ कर देंगे। आदम ने कहा कि परवरदिगार इससे भी कुछ ज़्यादा मुक़र्रर फ़रमा दे। फिर ख़ुदा की आवाज़ आई कि ऐ आदम हमने इससे भी ज़्यादा मुक़र्रर कर दिया। अगर बन्दा तौबा कर लेगा तो हम उसके तमाम गुनाह माफ़ कर देंगे चाहे अपनी ज़िंदगी की आख़िरी सांस में भी मेरी बारगाह में तौबा कर ले क्योंकि मैं रहमान व रहीम हूँ इसलिए उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दूँगा। यह सुनकर जनाबे आदम ख़ुश हो गए।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं कि तुम दुआ करो कि अल्लाह तुम्हें तौबा की तौफ़ीक़ अता करे।

ख़ुशनसीब है वह शख़्स जिसने इस बाबे रहमत की क़द्र की और उससे फ़ायदा उठाकर ख़ुदा का महबूब तरीन बन्दा बन गया और बदबख़्त है वह इंसान जो इस बाबे रहमत से महरूम रहे और तौबा के रास्ते से रहमत व ख़ुदा की मग़फ़िरत हासिल न करे।

क़यामत के दिन इंसान हिसाबो किताब के

वक़्त बहानेबाज़ी करेगा। उस वक़्त उसके तमाम बहानों का जवाब यह दिया जाएगा कि क्या हमने तुम पर तौबा के रास्तों को नहीं खोला था।

पैग़म्बरे अकरम[स॰] की हदीस है "गुनाह पर शर्मिन्दा होना ही तौबा है।" हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ॰] फ़रमाते हैं, "तौबा के लिए सिर्फ़ अपने किए पर पछताना ही काफ़ी है।" इमाम जाफ़र सादिक़ फ़रमाते हैं, "ऐसा कोई शख़्स नहीं है जो अपने गुनाह पर शर्मिन्दा हुआ हो और ख़ुदा ने उसे बख़्श न दिया हो। दरअस्ल शर्मिन्दगी ही गुनाह का छोड़ देना है।

हज़रत अली[अ॰] फ़रमाते हैं, "ऐसा नहीं हो सकता है कि इंसान शर्मिन्दा हुआ हो और गुनाहों को न छोड़ा हो।"

तमाम उलमा का मानना है कि गुनाह चाहे छोटा हो या बड़ा तौबा करना सबसे वाजिब है।

सूरए नूर की आयत 31 में आया है, "ईमान वालो! तुम सब अल्लाह की बारगाह में तौबा करते रहो। शायद इसी तरह तुम्हें कामयाबी व निजात हासिल हो जाए।" और सूरह तहरीम आयत/8 में है, "ऐ ईमान वालो! ख़ुलूसे दिल के साथ तौबा करो। बहुत जल्दी तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारी बुराईयों को मिटा देगा।"

सूरए बक़रा आयत/222 में है, "बेशक अल्लाह तौबा करने वालों को दोस्त रखता है।" इमाम सादिक़[अ॰] फ़रमाते हैं कि ख़ुदा मोमिन की तौबा पर इस तरह ख़ुश होता है जैसे तुम्हें एक खोया हुआ इंसान मिल जाए।

इमाम सादिक़[अ॰] फ़रमाते हैं, "कुछ लोगों की उम्र गुनाहों की वजह से कम हो जाती है और कुछ अपने तय वक़्त पर ही मरते हैं। ख़ुलासा यह कि गुनाह उम्र को घटाते हैं और तौबा उम्र को बढ़ाती है। यहाँ तक हदीसों में आया है कि-

1- तौबा दुआ की क़ुबूलियत की वजह बनती है।

2- तौबा ख़ुदा की तरफ़ से ख़ुशनसीबी का पैग़ाम लेकर आती है।

3- तौबा करने वाला जन्नती है।

4- गुनाह जितने भी ज़्यादा हों उसके रहम से बड़े नहीं, गुनाह तौबा से मिट जाते हैं।

5- तौबा तोड़ने से बातिल नहीं होती।

6- तौबा का दरवाज़ा आख़िरी साँस तक खुला रहता है।

7- गुनाह के बाद फ़ौरन तौबा वाजिब है।

तौबा के बारे में ख़ुलासे के तौर पर बात करना दरिया को कूज़े में बंद करने के बराबर है। बहरहाल अक़्लमंद को इशारा काफ़ी है कि इंसान चाहे जितना बड़ा गुनाहगार क्यों न हो अल्लाह की बारगाह में तौबा के रास्ते से जा सकता है।

तौबा अपने माबूद की तरफ़ ले जाने का वसीला है।

तौबा ईमान का दरीचा है।

तौबा मंज़िले यक़ीने इलाही है।

तौबा हक़ को क़ुबूल करने का एलान है।

तौबा गुनाह से बेज़ारी का इज़हार है।

तौबा ग़लतियों से निकलकर ख़ुदा की मारफ़त का हासिल करना है।

तौबा बन्दगी की शिनाख़्त है।

तौबा इंसानियत की मेराज है।

तौबा बंदगी का शऊर है।

तौबा गुनाहों की ग़फ़लत से बेदारी है।

तौबा रिज़ाए इलाही पर चलने का सोर्स है।

तौबा ख़ुदा की क़ुरबत का ज़रिया है।

तौबा आख़ेरत की बेहतरीन दौलत है।

इमाम सादिक़[अ॰] फ़रमाते हैं, "जो शख़्स गुनाहों से तौबा करना चाहे वह पहले वुज़ू करे, फिर दो रकात नमाज़ पढ़े और ख़ुदा से मग़फ़ेरत चाहे तो ख़ुदा उसकी तौबा क़ुबूल कर लेता है।"

सूरए निसा की आयत/110 में है, "जो भी किसी के साथ बुराई करेगा या अपने नफ़्स पर ज़ुल्म करेगा और उसके बाद इस्तग़फ़ार करेगा तो ख़ुदा को ग़फ़ूर व रहीम पाएगा।"

रसूले अकरम[स॰] उस वक़्त तक अपनी जगह से नहीं उठते थे जब तक 270 बार इस्तग़फ़ार नहीं कर लेते थे।

इस्तग़फ़ार के लिए सहर का वक़्त बहुत

अच्छा है। इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह ज़मीन वालों पर कोई बला नाज़िल करना चाहता है तो फ़रमाता है कि अगर वक़्ते सहर इस्तग़फ़ार करने वाले न होते तो मैं ज़रूर अज़ाब नाज़िल करता।

हज़रत लुक़मान अपने बेटे से फ़रमाते हैं, "मेरे बेटे मुर्ग़ तुम से ज़्यादा अक़्लमंद नहीं है कि वह सहर के वक़्त उठता है और मग़फ़िरत तलब करता है और तुम सोते रहते हो। यानी सहर का वक़्त तौबा व इस्तग़फ़ार करने का बेहतरीन वक़्त है।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ०] की दुआ में है कि परवरदिगार उस वक़्त तक मुझे मौत न देना जब तक मैं तेरे हुज़ूर में अपनी कमियों के लिए तौबा न कर लूं। वह इमाम जो कभी ग़लती ही न करते हों वह हमें दुआ का सलीक़ा सिखा रहे हैं और तौबा की तालीम दे रहे हैं ताकि हम अल्लाह की इस रहमत और नेमत से महरूम न रह जाएं।

इमाम हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं कि तौबा करने में इन चीज़ों का होना ज़रूरी है:-

1- गुनाह पर शर्मिन्दगी

2- आगे गुनाह से बचने का इरादा

3- लोगों के हक़ अदा करना यानी तौबा करने वाले पर किसी का हक़ न हो।

4- वाजिबात का अदा करना।

5- अपने गुनाहों को याद करके तन्हाई में रोना-गिड़गिड़ाना।

6- इबादत की सख़्तियों से लुत्फ़अंदोज़ होना।

सैय्यद बिन ताऊस अपनी किताब "नहजुद्दावात" में रसूले अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि जिस शख़्स पर सख़्त व मुश्किल वक़्त आ जाए वह ३ हज़ार बार *"अस्तग़फ़िरुल्लाह व अतूबू इलैह"* पढ़े। खुदावंदे तआला उसकी मुश्किल को यक़ीनन हल कर देगा।

रिवायत में है कि इमाम हुसैन[अ०] के वसीले से तौबा जल्दी क़ुबूल होती है।

सलाम

■ मोहसिन नक़वी

आशूर का ढल जाना, सुग़रा का वह मर जाना
अकबर[अ०] तेरे सीने में, बरछी का उतर जाना

ऐ ख़ूने अली असग़र[अ०] मैदाने क़यामत में
शब्बीर[अ०] के चेहरे पर कुछ और निखर जाना

सज्जाद[अ०] यह कहते थे, मासूम सकीना[अ०] से
अब्बास[अ०] के लाशे से चुपचाप गुज़र जाना

नन्हे से मुजाहिद को माँ ने यह नसीहत की
तीरों के मुक़ाबिल भी, बेख़ौफ़ो ख़तर जाना

'मोहसिन' को रुलाएगा, ता हश्र लहू अकसर
ज़हरा[स०] तेरी कलियों का सहरा में बिखर जाना

मोजिज़-ए-ज़ैनब[स०]

■ साग़र ख़ैय्यामी

ग़मे हुसैन[अ०] को फ़ितरत बना दिया उसने
दिलों को शह[अ०] का अज़ादार कर गई ज़ैनब[स०]
रसन बंधे हुए हाथों का मोजिज़ा देखो
महल यज़ीद का मिस्मार कर गई ज़ैनब[स०]

औलाद पर हराम कमाई का असर

■ हकीम मुबारक अली

इस्लाम का शुरुआती ज़माना है। पैग़म्बरे इस्लाम[स॰] अपने सहाबियों के साथ एक बाज़ार से गुज़र रहे हैं। सब ने देखा कि कुछ बच्चे रास्ते में खेल रहे हैं। बच्चों ने भी पैग़म्बरे इस्लाम[स॰] को देखा। जो नेक बच्चे थे सब ने सलाम किया। मगर एक बच्चे ने बहुत अजीबो-ग़रीब हरकत की। सलाम तो उसने भी किया मगर उसने मज़ाक़ भी उड़ाया और रसूले ख़ुदा[स॰] की तौहीन की। रसूले इस्लाम[स॰] ने बच्चे के सलाम का जवाब इस तरह दिया, "व अलै-कस्सलाम या व-ल-दुल हराम" यानी ऐ हराम की औलाद तुझ पर भी सलाम हो!

सहाबियों ने ये बात उस बच्चे के बाप को बताई तो उसका बाप रोता हुआ पैग़म्बरे अकरम[स॰] के पास आया और कहा, "आप अल्लाह के रसूल[स॰] हैं, ग़लत नहीं कह सकते। पहले तो मैं माफ़ी चाहता हूँ कि मेरे बच्चे ने आपकी तौहीन की लेकिन मेरी गुज़ारिश ये है कि ये बता दीजिए कि आपने मेरे बच्चे को हराम औलाद क्यों कहा? इसके लिए मैं कुसूरवार हूँ या मेरी बीवी?"

वैसे उसने अपनी बीवी को ही कुसूरवार ठहराया था।

रसूलुल्लाह[स॰] ने फ़रमाया, "इसके लिए तुम्हारी बीवी ज़िम्मेदार नहीं है बल्कि तुम ज़िम्मेदार हो।" उसने कहा, "या रसूलुल्लाह[स॰]! कैसे?" पैग़म्बरे अकरम[स॰] ने फ़रमाया, "जिस रात तुम्हारे इस बच्चे का नुतफ़ा ठहरा था उस रात तुम्हारी कमाई हराम की थी।"

ये है हराम की कमाई का असर। हराम की कमाई से ग़िज़ा हासिल की और उस से जो नुतफ़ा ठहरा उसका असर ये हुआ कि बच्चे ने रसूल[स॰] की तौहीन की।

इस्लाम हलाल चीज़ें खाने पर ज़ोर देता है क्योंकि हराम की कमाई का बच्चे की ज़िन्दगी पर बहुत बुरा असर पड़ता है। मिसाल के तौर पर एक जज को रिश्वत इसलिए दी जाती है ताकि वह रिश्वत देने वाले के हक़ में फ़ैसला करे। ऐसे जज को हर वक़्त ये फ़िक्र लगी रहती है कि चाहे जैसे हो, दौलत आए। जब जज में लालच बढ़ जाती है तो वह अपने फ़ाएदे के लिए ग़लत फ़ैसला कर देता है जिस से समाज में बुराईयाँ जन्म लेती हैं और जज की ये फ़िक्र और ख़यालात जज को पत्थर दिल बना देते हैं क्योंकि दौलत की लालच में वह बेरहम होकर फ़ैसले करता है और उसकी यही बेरहमी उसके पत्थर दिल होने की निशानी है। ऐसी सोच रखने वाले लोगों (जैसे ऊपर की मिसाल में जज) के सेल्स इन ख़यालात को जज़्ब करते रहते हैं। यही ख़ून आगे चलकर इन्सानी जौहर (स्पर्म) बन जाता है। अब इससे जो बच्चा पैदा होगा वह सख़्त दिल होगा। हाँ! अगर बाद में उसे सही एजुकेशन, परवरिश और अच्छा माहौल मिल गया तो बुरी आदतें दब सकती हैं। अगर सही एजुकेशन और परवरिश न मिली तो वह बच्चा बड़ा होकर दौलत की ख़ातिर ज़ुल्म करता हुआ नज़र आएगा।

एक्सपर्टस कहते हैं कि माँ-बाप का बिहेवियर बच्चों की शख़सियत की तराश-ख़राश में बहुत ख़ास रोल अदा करता है। दूसरे लफ़्ज़ों में बच्चों की शख़सियत की बुनियाद दरअसल पैरेंटस के ज़रिए बनाए गए घरेलू माहौल से पड़ती है। जिसमें बच्चे सिर्फ़ ज़िन्दगी गुज़ारने के उसूल सीखते हैं। पैरेंटस का फ़र्ज़ ये है कि वह बच्चों को ऐसा ख़ुशगवार माहौल दें कि वह आगे चलकर एक ख़ुशगवार और ख़ूबसूरत ज़िन्दगी गुज़ार सकें। अगर घर का माहौल सही न हो तो बच्चे के कैरेक्टर पर भी उसका बहुत ग़लत असर पड़ता है।

हराम रोज़ी

हराम रोज़ी खाने वाले के बारे में रसूले अकरम[स॰] ने फ़रमाया है, "जब किसी बन्दे के पेट में हराम माल का एक लुक़मा भी चला जाता है और बदन का हिस्सा बन जाता है तो आसमान-ज़मीन के फ़रिश्ते उस पर लानत करते हैं।"[1]

हर वह गोश्त जो हराम माल खाने की वजह से बढ़ा हो जहन्नम की आग में जलने का सबसे ज़्यादा हक़ रखता है और बेशक एक लुक़्मे से भी कुछ न कुछ गोश्त बढ़ता है।[2]

प्रेगनेंसी में हराम ग़िज़ा खाने का असर

अल्लामा मजलिसी जो अपने वक़्त के बहुत बड़े आलिमे दीन थे, एक बार अपने बच्चे को मस्जिद लेकर जाते हैं। बच्चा कभी खेलता है और कभी सजदा करता है। एक मोमिन पानी की एक मश्क लेकर आया और वहीं रख कर नमाज़ पढ़ने लगा। बच्चे के ज़ेहन में शरारत

कल की माँ

■ डा. मुहम्मद बाक़िर हुज्जत

रूसो कहता है, "बच्चे की परवरिश माँ के एतेबार से होती है। अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा बच्चा बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत को समझ ले तो तुम्हें चाहिए कि बच्चे की माँ की परवरिश करो।"

शायद सब से पहली और ज़रूरी चीज़ बच्चे की सेहत और सलामती ही है जिसका ख़याल रखना पैदाइश से पहले से लेकर उसके बाद भी बहुत ज़रूरी है। इसलिए लड़की को ये सिखाने की सख़्त ज़रूरत है कि प्रेगनेंट होने का मतलब क्या है? प्रेगनेंट होने की सही सूरत क्या है? और बच्चे पर ध्यान किस तरह से रखना चाहिए। लड़की को सेहत और बदन के सारे उसूलों के बारे में जितना हो सकता हो, उतना ज़रूर बताना चाहिए और इसी तरह अपनी और अपने बच्चे की जिस्मानी वरज़िश, पाक-साफ़ और खुली हवा, सूरज की रौशनी की अहमियत खाने पीने और साफ़-सफ़ाई के उसूलों को भी सिखाना चाहिए। इसी तरह मुनासिब लिबास की क़िस्में, बच्चे को बीमारियों से बचाने के तरीक़े और अगर बीमार हो जाए तो उसके इलाज के बारे में जानकारी भी उसके पास होना चाहिए।

ये तो साफ़ ही है कि लड़की इस तरह की बातों को सिर्फ़ किताबों और टीचर से नहीं सीखती बल्कि स्कूल और घर में अपने आबर्ज़वेशन और तजुर्बों से भी सीखती है।

इसके अलावा माँ का ध्यान बच्चे की जिस्मानी ज़रूरतों और अख़लाक़ी वैल्यूज़ की तरफ़ भी होना चाहिए लेकिन इसमें बच्चे की ज़िन्दगी के मरहलों और परवरिश को भी ध्यान में रखना चाहिए। साथ ही लड़की को ये भी सीखना चाहिए कि बच्चे को किस तरह बुरी आदतों से रोका जा सकता है और किस तरह इताअत, फ़रमांबरदारी, कांफ़िडेन्स और दूसरों के राइट्स का एहतेराम और इस जैसी अच्छी आदतों को उसके अन्दर पैदा किया जा सकता है। माँ का फ़र्ज़ यह भी है कि वह अपने बच्चे को ये भी सिखाए कि किस तरीक़े से किसी मुश्किल का हल ढूँढा जा सकता है और किस तरह सोचने-समझने की ताक़त को उभारा जा सकता है। आने वाले ज़माने में माँ बनने के लिए एक लड़की की परवरिश के लिए बेहतर है कि उसे दिखा कर यानी अमली तरीक़ों के साथ जानकारियां दी जाएं। आख़िर में इस बात का बताना भी ज़रूरी है कि माँ की ज़िन्दगी का सबसे ख़ास रोल, वह पाक मुहब्बत है जिसके साथ उसे अपने बच्चे की परवरिश करना चाहिए। ●

आई। उसने उस मोमिन की मश्क में सूराख़ कर दिया और सारा पानी बह गया। नमाज़ के बाद अल्लामा मजलिसी को जब पता चला तो बहुत परेशान हो गए और सोच कर कहने लगे कि मैंने तो कोई हराम काम नहीं किया, वाजिब, मुस्तहब और हर हराम का ख़याल रखा, ऐसा ज़ुल्म मेरे बच्चे ने कैसे कर दिया? यक़ीनन ये ग़लती माँ की तरफ़ से हुई है। उन्होंने अपनी बीवी से पूछा, "हमारे बच्चे ने एक मोमिन को नुक़सान पहुँचाया है और उसका पानी बहा दिया। उसने ऐसा क्यों किया है? यक़ीनन कहीं न कहीं इसमें हमारी ही ग़लती है।" माँ ने सोचकर कहा, "हाँ! मेरी ग़लती है। प्रेगनेंसी के दौरान मैं मोहल्ले के किसी घर में चली गई थी जहां अनार का एक पेड़ लगा हुआ था। मैंने घर वालों की इजाज़त के बिना एक सूई अनार में चुभोई और उस से जो रस निकला था, उसे चख लिया था।"

आपने देखा! एक ज़रा से हराम काम का असर औलाद पर किस तरह पड़ता है। इसलिए औरत को चाहिए कि वह हराम चीज़ें खाने से बचे ताकि उसकी औलाद बुरी आदतों से बची रहे।

रसूले ख़ुदा[स०] फ़रमाते हैं, "इबादत की सत्तर क़िस्में हैं। उनमें सब से अच्छी क़िस्म की इबादत हलाल रोज़ी कमाना है।"

1-सफ़ीनतुल बिहार, 1/245, 2-सफ़ीनतुल बिहार, 1/24 ●

साल 2012

2+0+1+2=5

2x0+12=12

2+0+12=14

अल्लाह से दुआ है कि 5 पंजतन, 12 इमाम और 14 मासूमीन के सदक़े में हर मोमिन का साल 2012 अच्छा गुज़रे!

सै. आले हाशिम रिज़वी

दीनदारी
पार्ट–टाइम या फुल–टाइम

■ उज़मा नक़वी

इस साल मोहर्रम में अभी तक आप ने बहुत सी मजलिसों में शिरकत की होगी और इन मजलिसों से आपने ज़रूर काफ़ी कुछ हासिल भी किया होगा। अब बारी इस बात की है कि जो कुछ सीखा है उसे अपनी ज़िंदगी में अपनाया जाए।

जी हाँ! यह मजलिसें, यह ज़िक्रे हुसैन[अ॰], यह नौहा, यह मातम इन सब का मक़सद सिर्फ़ हमारे अंदर रिफ़ार्म और सुधार है क्योंकि इमाम हुसैन[अ॰] ने मदीने से निकलते वक़्त सबको यह बता दिया था, ''मैं अपने जद की उम्मत की इस्लाह के लिए जा रहा हूं और यह इस्लाह अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर के ज़रिए होगी''।

इसलिए हमारी अज़ादारी को भी इमाम के मक़सद के मुताबिक़ ही होना चाहिए। असल में अगर देखा जाए तो इसी अज़ादारी से हमारे घर की भी इस्लाह होती है और हमारी तरबियत भी। इसलिए यह कोशिश करें कि घर के सारे मेम्बर किसी क्लास की तरह मजलिस को अटेंड करें, जो अहम प्वाइंट्स हों उनको नोट करें और वहाँ से लौट कर सब आपस में डिस्कस करें कि इस मजलिस से हमें क्या मिला, हमारी कितनी इस्लाह हुई और अगर यह लगता है कि कोई बात आप की समझ में नहीं आई तो फ़ौरन उसी आलिम से उसको समझने की कोशिश करें क्योंकि करबला वह दर्सगाह है जिसमें बच्चों की तरबियत कैसे हो, शौहर से रिलेशंस कैसे हों या फ़ैमिली के हक़ को कैसे अदा हों, सब कुछ मौजूद हैं। लेकिन यह हमें तब ही हासिल हो सकती हैं जबकि हम मजलिस में सीख कर उसको अपनी ज़िंदगी में अपनाएं। और अगर किसी मजलिस में कोई सीख ही न मिल रही हो तो यह फ़ैसला भी आपको ही करना है कि दोबारा उस मजलिस में जाएं या न जाएं।

दीनदारी की महदूदियत

कभी-कभी यह देखने में आता है कि हम मजलिस को एक मज़हबी रस्म समझकर अदा कर देते हैं और यह समझते हैं कि हमारी ज़िम्मेदारी ख़त्म हो गई, जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है। मजलिस से ज़िम्मेदारी ख़त्म नहीं होती बल्कि शुरु होती है क्योंकि वहाँ से हमको इमाम हुसैन[अ॰] का पैग़ाम और अहलेबैत[अ॰] की टीचिंग्स मिलती हैं जो हमको हमारी ज़िम्मेदारियों का एहसास दिलाती हैं और ज़िंदगी गुज़ारने का सही तरीक़ा बताती हैं।

हम यह समझते हैं कि हम ने मजलिस, मातम या जुलूस में शिरकत कर ली और इस से हमारी मज़हबी ज़िम्मेदारी पूरी हो गई। अब हम दुनियावी या ग़ैर मज़हबी एक्टिविटीज़ के लिए आज़ाद हैं, यानी पार्ट टाइम दीन यानी दिन में एक-दो बार या हफ़्ते में एक बार या महीने व साल में दो-एक बार कुछ दीनी रस्मों को पूरा करके हम अपने आप को आज़ाद समझ लेते हैं और अब दुनियावी एक्टिविटीज़ में जो भी ग़लत-सही करें उसी की तौबा व इस्तेग़फ़ार का नाम दीन है। या ख़ुदा से दुनियावी चीज़ों के माँगने और उसके लिए दुआ करने का नाम भी दीन है।

सिर्फ़ रमज़ान, मोहर्रम या जुमेरात-जुमे को मज़हब के नाम पर कुछ कर लेने से मज़हबी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं होती बल्कि दीन पूरी ज़िंदगी को दीनदार बनाना चाहता है क्योंकि हमारा दीन पार्ट टाइम दीन नहीं बल्कि फुल टाइम दीन है।

मरयम
January 2012
Monthly Coupon
ड्रॉ में शामिल होने के लिए
10 कूपन जमा करके हमें भेजिए।

इसी तरह हम अपने घर के एक हिस्से में इमामबाड़ा बनाकर उसे इमाम से मख़सूस कर देते हैं, यानी वहाँ गुनाह नहीं कर सकते, वहाँ कोई ग़लत और बुरे काम नहीं कर सकते मगर इसके अलावा बाक़ी पूरे घर को हर तरह के कामों जैसे फ़िल्म, म्युज़िक, ग़ीबत, नामहरम को देखना वग़ैरा के लिए आज़ाद समझते हैं।

यह तो ज़ुलैख़ा का ईमान से पहले वाला ख़ुदा हो गया कि जो एक पर्दे से न देख सके, जबकि ऐसा नहीं है। हमारा पूरा घर इमामबाड़े जैसा होना चाहिए जहाँ अलम वग़ैरा हो वह भी और जहाँ न हो वह भी।

दीनदारी की टाइमिंग

करबला हम को यही सबक़ देती है, *"कुल्लु यौमिन आशूरा व-कुल्लु अर-ज़िन करबला"* यानी हर दिन आशूरा और हर ज़मीन करबला है या ज़ियारते आशूरा का वह मशहूर जुमला "ऐ अहलेबैते अतहार! जिन से आप हालते जंग में हैं उन से क़यामत तक हम भी हालते जंग में हैं और जिन से आप ने सुलोह की उन से हम ने भी सुलोह की। इस तरह की जितनी बातें हैं वह सब न किसी ख़ास वक़्त और न ही किसी ख़ास टाइम के लिए बल्कि हर जगह और हर टाइम के लिए हैं।

जिस तरह दीन हर जगह और फ़ुल टाइम है उसी तरह अज़ादारी भी फ़ुल टाइम और हर जगह है। इसके लिए हमें अपने बच्चों की ऐसी तरबियत करनी होगी कि वह न तो किसी ख़ास जगह जैसे सिर्फ़ मस्जिद या इमामबाड़े के दीनदार हों और न ही किसी ख़ास वक़्त जैसे नमाज़ या मजलिस के दीनदार हों बल्कि वह करबला वालों की तरह फ़ुल टाइम और हर जगह पर दीनदार नज़र आएं ताकि जनाबे इब्राहीम[अ०] की दुआ कि जिसको क़ुरआन ने नक़्ल किया है, उसके मिस्दाक़ बन जाएं: *"इन्न-न सलाती व नुसुकी व मह्-या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन।"* यानी हमारी नमाज़, हमारी क़ुर्बानियाँ, हमारी ज़िंदगी और हमारी मौत सबके सब सिर्फ़ अल्लाह के लिए हैं।

दीनदारी की तरबियत

आपके कंधों पर आने वाली नस्ल की तरबियत की अहम ज़िम्मेदारी है इसलिए आपको यह मालूम होना चाहिए कि इस नस्ल को कितने वक़्त और कहाँ के लिए तैयार करना है।

उनको सिर्फ़ मजलिसों और नमाज़ वग़ैरा में शिरकत के लिए और सिर्फ़ इमामबाड़े या मस्जिद के लिए ही नहीं बल्कि इस से हट कर भी तरबियत की ज़रूरत है। क्योंकि दीन भी फ़ुल टाइम, करबला भी फ़ुल टाइम इस्लाम है, इसलिए तरबियत और तैयारी भी उसी के एतेबार से होनी चाहिए।

जिस तरह जंग के मैदान में जाने वाले सिपाही की तरबियत इस अंदाज़ में होती है कि वह किसी भी तरह अपने दुश्मन के सामने कमज़ोर न पड़े इसी तरह आपको भी आने वाली नस्ल की ऐसी तरबियत करनी है कि वह किसी तरह भी दीन पर अमल करने में कहीं कमज़ोर न पड़ जाए।

इसके लिए आपके सामने जनाबे ज़ैनब, जनाबे रबाब जैसे बहुत से किरदार मौजूद हैं जिन्होंने ऐसे ख़राब हालात में भी किसी भी जगह अपने बच्चों को कमज़ोर नहीं पड़ने दिया।

यह न कहिए कि हालात सही नहीं हैं, ज़माना ख़राब है, इतना दीन पर अमल नहीं हो पाता। आज न करबला जैसे हालात हैं और न वैसा ज़माना, न हम ही दुश्मनों के बीच में हैं और न हम पर कोई पाबन्दी है। जब करबला वाले उन बुरे हालात में फ़ुल टाइम दीन पर अमल करके बेहतरीन नमूना-ए-अमल बन सकते हैं तो क्या हम ऐसे हालात में जो उन हालात से कई गुना अच्छे हैं, दीनदार नहीं बन सकते।

Name...
Father's Name..

دو ماہی مؤمّل لکھنؤ

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

آج ہی ممبر بنئے
زرسالانہ
Rs.150

द्विमासिक मुअम्मल लखनऊ
MUAMMAL

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Ph.: 0522-2405646, 9839459672
email: muammal@al-muammal.org

कोई रिसर्च आख़िरी नहीं

■ सै. आले हाशिम रिज़वी

लाइट की स्पीड सबसे तेज़ है। अभी तक हम यही पढ़ते, सुनते और मानते आए हैं। दरअसल जर्मन साइंसटिस्ट अल्बर्ट आइंस्टाइन की रिसर्च ने साबित कर दिया था कि लाइट की स्पीड सबसे तेज़ है। लेकिन मार्डन साइंस की एक नई रिसर्च ने सबको हैरत में डाल दिया है। इस नई रिसर्च के मुताबिक़ लाइट की स्पीड सबसे तेज़ नहीं है। यूरोप की एक रिसर्च लैबोरेटरी से जुड़े कुछ साइंटिस्ट्स का यह कहना है कि उन्हें अपनी रिसर्च के दौरान ऐसे सब-एटॅमिक पार्टिकल्स का पता चला है जिनकी स्पीड लाइट से तेज़ पाई गई है। इस नई जानकारी ने तमाम साइंटिस्ट्स को हैरत और फ़िक्र में डाल दिया है क्योंकि यह जानकारी सालों से माने जा रहे साइंस के उसूल के ख़िलाफ़ है। इस रिसर्च के दौरान लाइट की स्पीड के साथ सफ़र करने वाले न्यूट्रांस को लैबोरेटरी से 700 किलोमीटर के फ़ासले पर बनी एक दूसरी लैबोरेटरी में भेजा गया। वहाँ से लाइट की स्पीड से ही सफ़र करते हुए जब वह न्यूट्रांस वापस आए तो उनकी वापसी का टाइम लाइट की स्पीड के मुक़ाबले पूरे एक सेकेंड तेज़ पाया गया। जो साइंसटिस्ट इस रिसर्च से जुड़े थे वह इस हैरानी भरे नतीजे को आख़िरी नतीजा नहीं मान रहे हैं। उन्होंने दूसरे साइंटिस्ट्स से इस रिसर्च को हर तरीक़े से परखने के लिए कहा है। इस सिलसिले में अमेरिकी साइंटिस्ट्स ने अपनी रिसर्च शुरु कर दी है। दूसरे मुल्कों के साइंटिस्ट इस जानकारी की जाँच-पड़ताल करने में जुट गए हैं।

अल्बर्ट आइंस्टाइन की बरसों पुरानी थ्योरी पर जो कोश्चन-मार्क लगा है उसमें यह जवाब तो मिल ही गया है कि कुदरती सिस्टम के किसी भी मामले में इंसानी दावों की कोई हक़ीक़त नहीं है। हम ख़ुदा की बनाए हुए इस युनिवर्स के किसी भी क़ानून को अपनी सोच में नहीं बांध सकते। यह सही है कि आइंसटाइन एक बहुत क़ाबिल साइंटिस्ट थे लेकिन वह कोई ख़ुदाई नुमाइंदे नहीं थे। उन्होंने लाइट की स्पीड को सबसे तेज़ बताने में अपने जिस दिमाग़ का इस्तेमाल किया उसकी हद और ताक़त ख़ुदा की ही तय की हुई थी। वह सिर्फ़ उतना ही सोच सके जितने की ख़ुदा ने उनको इजाज़त दी थी। यही वजह है कि उनकी कही बात आख़िरी फ़ैसला नहीं बन सकी और आज उनकी थ्योरी शक के घेरे में आ चुकी है। ख़ुदा चाहे तो लाइट से भी तेज़ स्पीड का मुज़ाहेरा किसी तरीक़े से कर सकता है। इस फ़ैक्ट को रसूल[स॰] की मेराज वाले वाक़ेए से बड़ी आसानी से समझा जा सकता है। रसूले इस्लाम हज़रत मोहम्मद[स॰] ने जिस तेज़ स्पीड और कम वक़्त में सात आसमानों का सफ़र तय किया उस पर इंसानी अक़्ल आज तक हैरान है। ज़ाहिर है जो इंसान लाइट से तेज़ भी कुछ हो सकता है, यही सोचकर हैरान है, वह रसूल[स॰] की मेराज को कैसे समझ सकता है।

मेरा यह आर्टिकिल रसूल[स॰] की मेराज पर नहीं है वरना मैं इस वाक़िए से जुड़ी कुछ और अहम बातें भी बयान करता। लेकिन लाइट की स्पीड के सिलसिले में पेश की जा रही नई तहक़ीक़ के पीछे छुपी ख़ुदा की मसलहेत को समझाने के लिए इस वाक़ेए का ज़िक्र ज़रूरी था।

इस युनिवर्स का हर ज़र्रा क़ुरआने मजीद के सूरए रहमान की 29वीं आयत को पढ़ता हुआ नज़र आता है जिसमें कहा गया है, "**ज़मीन और आसमान में जो भी मख़लूक़ात हैं, सब अपनी हाजतें उसी से माँग रहे हैं।**" ख़ुदा की क़ुदरत हर किसी को अपनी बेपनाह ताक़त का एहसास करा देती है। यह सही है कि साइंटिस्ट्स ने ख़ुदा की दी हुई अक़्ल और सलाहियत का इस्तेमाल करते हुए एक से बढ़कर एक ईजाद और खोज की है। लेकिन उसी ख़ुदा के बनाए हुए एक छोटे से ज़र्रे यानि एटम तक को मुकम्मल तौर पर डिफ़ाइन नहीं कर सके हैं। सोचिए! जब उस ख़ुदा के छोटे से क्रिएशन को समझ पाना साइंटिस्ट्स के लिए मुश्किल बना हुआ है तो फिर उनकी रिसर्च आख़िरी फ़ैसला कैसे हो सकती है। उनकी कोई भी तहक़ीक़ और नज़रिया कभी भी ग़लत साबित हो सकता है।

हज़रत अली[अ॰] ने लाइट के सिलसिले में काफ़ी कुछ हमें बताया है। लेकिन आपकी बातों में कहीं भी ऐसा कुछ नहीं मिलता जिससे यह साबित होता हो कि लाइट की स्पीड सबसे तेज़ है। बल्कि हिस्ट्री में यह ज़रूर मिलता है कि उनकी तलवार 'ज़ुल्फ़ेक़ार' जब जंगों में चलती थी तो उसकी स्पीड लाइट से भी तेज़ होती थी। यही वजह है कि ज़ुल्फ़ेक़ार के सामने हर किसी की तलवार कमज़ोर पड़ जाती थी। ●

फूल भी कांटे भी

■ इंजीनियर हसन रज़ा नक़वी

इन्सान की एक ख़ासियत यह भी है कि वह बातें जो अल्लाह ने उसके नेचर में शामिल की हैं उन्हें करने या देखने में उसे ज़्यादा मज़ा नहीं आता बल्कि वह चीज़ें उसे ज़्यादा लुभाती हैं जो नेचर के बाहर की हैं। छोटी सी मिसाल यह है कि नेचुरल तौर पर इंसान ज़ुल्म से नफ़रत करता है मगर सबसे ज़्यादा पसंद उसे लड़ाई-झगड़े और क़त्लो ग़ारत गरी के सीरियल व एक्शन मूवीज़ ही आती हैं। इसी तरह और भी बहुत सी मिसालें हैं...न कि बच्चे! ख़ास कर वह जिनका ज़िक्र चल रहा है यानी 13 से 19 Age group के बच्चे। नई-नई जवानी आती है, हर काम आसान लगता है, बस इशारा चाहिए।

अक्सर देखा गया है कि नवीं क्लास और ग्यारहवीं क्लास के बच्चे अपनी क्लास को बहुत हल्के में लेते हैं और उनके दोस्त उन्हें समझा भी देते हैं कि अभी तो पूरा साल पड़ा है, ख़ासकर ग्यारहवीं में। यह उन बच्चों के साथ ज़्यादा होता है जिनके दसवीं में नम्बर अच्छे आ गए हों। यहाँ यह समझना बहुत ज़रूरी है कि दसवीं की बुनियाद नवीं क्लास है और बारहवीं की बुनियाद ग्यारहवीं क्लास है। सोचने की बात है कि अगर किसी को जोड़ना और घटाना न आता हो तो कैसे Multipication & Division कर सकेगा! दोनों बोर्ड के एक्ज़ाम्स की सीढ़ियाँ हैं जहाँ पेपर भी कोई और बनाता है और कापी भी कोई और चेक करता है। पूरी किताब में से कहीं से भी सवाल पूछा जा सकता है। रटने से आप उसके रिज़ल्टस तक नहीं पहुँच पाएंगे जैसे **Maths** ही में कुछ स्टेप्स को **Solve** करके उन्होंने सवाल बना दिया और आप परेशान हो गए कि यह सवाल तो मैंने किया ही नहीं। यहाँ मैंने **Maths** की मिसाल ख़ास करके दी है। कामर्स और आर्ट्स के लड़के-लड़कियाँ सोचते हैं कि हमें **Maths** से क्या काम... सच्चाई यह है कि इसके बिना रियल लाइफ़ अधूरी रह जाती है। आपको क़दम-क़दम पर इसकी ज़रूरत पड़ती है और कामर्स में तो **Maths** के बिना किसी तरह काम चल ही नहीं सकता क्योंकि **Economics and Accounts** वग़ैरा बिना **Maths** के आगे बढ़ ही नहीं सकते।

ज़िक्र आ गया है तो एक बार फिर यह बात कह दी जाए कि **English** और **Maths** हर एक स्टूडेंट के लिए ज़रूरी हैं। हिन्दुस्तान में इस वक़्त मल्टी-नेश्नल कम्पनियाँ आ गई हैं और आती जा रही हैं। सारा काम इंग्लिश में ही हो रहा है ख़ासकर अच्छी स्पीचिंग-पॉवर का होना बहुत ज़रूरी है। आसान सा फ़ार्मूला है रोज़ इंग्लिश न्यूज़ पेपर जैसे **The Times of India** या **Hindustan Times** वग़ैरा ज़रूर लें (पैरेंट्स पॉकिट-मनी में इस बात का ख़याल रखें कि बच्चों को **General Books** भी लेने के लिए पैसे दिया करें)। अंग्रेज़ी के अख़बार ज़्यादा बातें कवर करते हैं। अक्सर **Genuine News** भी होती हैं और ज़बान अच्छी इस्तेमाल करते हैं। अपनी पसंद का पेज

खोलें और एक दो Paragraph रोज़ अवाज़ से पढ़ें। पाँच मुश्किल Words एक छोटी डायरी पर लिखें और उनके Meanings डिक्शनरी से या किसी जानकार से पूछ कर लिख लें। उन्हें अपने Sentences में ढालें, इस तरह अगर रोज़ पाँच में से दो भी याद रहे तो महीने में साठ नए Words आप सीख जाएंगे। फिर देखिए दुनिया कितनी बदली हुई नज़र आएगी...

ज़्यादातर किताबें इंग्लिश में होती हैं। अगर आप इंग्लिश में कमज़ोर हैं तो दोहरी मेहनत करनी पड़ती है। पहले Sentence समझिए फिर क्या कहना चाह रहे हैं वह समझिए। अगर इंग्लिश समझ में आ जाए तो आधी प्राब्लम्स ख़त्म हो जाती हैं।

इस Age group की बातें आगे करते रहेंगे इसलिए इस बार यही Topic ले लें जो छिड़ गया है।

जब भी कोई लड़का Practical Life में आता है यानी नौकरी या कारोबार में लगता है तो दो बातें बहुत ज़रूरी होती हैं: एक तो Communication Skill और दूसरे Presentation यानी कैसा दिखाई देता है और कैसा बोलता है। इस उम्र के लड़के अच्छी भली सूरत बिगाड़ लेते हैं। अजीब-अजीब बाल, अजीब कपड़े वग़ैरा, बस नए फ़ैशन से मतलब होता है। जबकि जिन लोगों के हाथ में आपका Future है वह सब वह हैं जो यह देखते हैं कि आप कैसे दिखाई देते हैं और कैसे बोलते हैं। स्कूल और कालेज में भी रिज़ल्ट आख़िर में आएगा पहले तो साल भर यही दो चीज़ें नज़र आएंगी।

क्रिश्चियन स्कूलों में भी युनिफ़ार्म पर बहुत ध्यान दिया जाता है। युनिफ़ार्म यानी ''एक-जैसा''। मतलब यह हुआ कि भले ही आप करोड़पति हों, फ़िल्मी हीरो के बेटे हों या रिकशा वाले के, सब के एक जैसे कपड़े, एक जैसे बाल और एक जैसे जूते होंगे। अलीगढ़ के कुछ स्कूलों में आज भी Cotton ही पहनकर स्कूल आने की शर्त है। आज कल ज़्यादा जगहों पर हालात हालांकि बदल चुके हैं। एक से एक महंगी बाइक पर अठारह साल से कम के लड़के-लड़कियाँ वह भी तीन-तीन सवारियाँ बिठाए दौड़ रहे हैं। एक साथ तीन-तीन क़ानून तोड़ना ख़ुद पैरेंटस सिखा रहे हैं। और अंदर से कई बातें ख़ुद-बख़ुद आ जाती हैं। fake license बनेगा, उसके बाद गाड़ी के फ्रंट और रियर साइड पर "Press" या "Police" लगाया जाएगा। फिर पुलिस वाले ने पकड़ लिया तो सत्तर झूठ बोले जाएंगे, ख़तरनाक Accidents होंगे वग़ैरा-वग़ैरा। माँ-बाप कहते हैं कि आयतलकुर्सी पढ़कर निकलो यानी चोरी करने आयतलकुर्सी पढ़के निकलो! ढेर सारी दुआएं पढ़ी जाती हैं। क़ानून तोड़ना, झूठ बोलना, दूसरों के लिए ख़तरे पैदा करना यह सब बड़े गुनाह हैं। आप ख़ुद सोचें कि किसी बड़े गुनाह के पहले अल्लाह का नाम लेना काम आएगा? बल्कि मुसीबत और बढ़ेगी! फिर यह सब देखकर दूसरे ग़रीब बच्चे कॉम्पलेक्स यानी एहसासे कमतरी का शिकार होते हैं, सिर्फ़ ग़रीब ही नहीं बल्कि Genuine Parents के बच्चे भी। उधर लड़का धीरे-धीरे कपड़ों और बाइक की लालच में नए रास्तों पर निकल पड़ता है।

हो सकता है कि बहुत से पैरेंटस कहें कि हम यह सब कुछ इसलिए दिला देते हैं ताकि बच्चे में कॉम्पलेक्स न आए। आपके बच्चे में तो नहीं आता (जो कि ग़लत ख़याल है) लेकिन दूसरे कितने बच्चों में आ गया, यह कभी नहीं सोचा! साथ ही आपके बच्चे में कॉम्पलेक्स तो नहीं आया मगर ग़रूर, अकड़ कर चलना और ज़्यादा की हवस ज़रूर आ गई। अभी कुछ दिन पहले ही हिन्दुस्तान के एक बड़े खिलाड़ी ने अपना जवान बेटा और भांजा अपनी ही तोहफ़े में दी हुई बाइक से खो दिया। यह सब से ख़तरनाक पहलू है। अगर आप ग़ौर करें तो एतेदाल (Balance) खो देने वाले लोग ही दुनिया और आख़िरत दोनों गंवा देते हैं। और ज़िंदगी को बैलेंस पर लाना हो तो बीस साल की उम्र के अंदर जो सीखा है वही ज़िंदगी भर साथ रहता है। ●

HK

KAZIM

Zari Art

All Kinds of
Sarees, Suits
& Lehanga Chunri

Hata Dhannu Beg
Kazmain Road Lucknow

Contact No.
0522-2264357, 9839126005
8687926005

अली[अ०] की ज़िम्मेदार बेटी

■ मौलाना अख़तर अब्बास जौन

इन्सानों के पहचानने का एक अच्छा तरीक़ा यह भी है कि देखें वह कितना ज़िम्मेदार इंसान है। एक इन्सान जितना ज़िम्मेदार होता है उसे उतना ही बड़ा इन्सान कहा जा सकता है। इन्सान में जितना ज़िम्मेदारी का एहसास बढ़ता जाता है वह उतना ही इन्सानी वैल्यूज़ से क़रीब होता जाता है।

दीन की नज़र में भी एक इन्सान उतना ही दीनदार है जितना वह ज़िम्मेदार है। हदीस में बयान हुआ है, ''उस इन्सान के पास दीन ही नहीं है जो ज़िम्मेदार नहीं है।''

ज़िम्मेदारी के तीन स्टेप्स हैं:

1- ज़िम्मेदारी का एहसास

पहले मरहले में इन्सान को यह एहसास हो कि उसके आस-पास में कितनी डिमांड्स हैं जो उसे अपनी तरफ़ बुला रही हैं और कितनी ज़िम्मेदारियाँ हैं जिनको कोई उठाने वाला नहीं है। कुछ अपनी पर्सनल ज़िम्मेदारियाँ हैं तो कुछ घर के मुताल्लिक़ ज़िम्मेदारियाँ, कुछ दोस्त, अज़ीज़ों और रिश्तेदारों की ज़िम्मेदारियाँ तो कुछ सोसाइटी में मौजूद दूसरे इन्सानों की ज़िम्मेदारियाँ, कुछ इन्सानी ज़िम्मेदारियाँ तो कुछ दीनी और अल्लाह की तरफ़ से दी गई ज़िम्मेदारियाँ। ज़िम्मेदारियों का सही वक़्त पर एहसास करने के लिए इन्सान में ऊंची सोच और मज़बूत समझ की भी ज़रूरत है।

2- ज़िम्मेदारियों को क़ुबूल करना

ज़िम्मेदारियों के एहसास के बाद दूसरा स्टेप ज़िम्मेदारियों को क़ुबूल कर लेना है जिसके लिए इन्सान में मज़बूत इरादे की ज़रूरत है। ज़िम्मेदारी जितनी बड़ी हो इरादा भी उतना ही मज़बूत होना चाहिए।

3- ज़िम्मेदारियों को पूरा करना

सबसे सख़्त स्टेप ज़िम्मेदारियों को पूरा करना होता है जिसके लिए इन्सान में बहुत सब्र की ज़रूरत होती है वरना इन्सान ज़िम्मेदारी क़ुबूल तो कर लेता है या वादा कर लेता है लेकिन सब्र और इरादे की मज़बूती न होने की वजह से बाद में उसे शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ता है।

इसलिए तीनों स्टेप्स में कामयाबी के लिए इन्सान में तीन ताक़तों की ज़रूरत है। पहले स्टेप यानी ज़िम्मेदारी के एहसास के लिए इन्सान में ऊंची सोच और मज़बूत समझ की ज़रूरत है जिसकी मदद से वह ज़िम्मेदारियों का एहसास कर सके। दूसरे स्टेप में कामयाबी के लिए मज़बूत इरादे की ज़रूरत है और तीसरे स्टेप में कामयाब होने के लिए इन्सान में बहुत ज़्यादा सब्र की ज़रूरत है।

हज़रत ज़ैनब[अ०] का एहसासे ज़िम्मेदारी

इस्लामी हिस्ट्री के एक बहुत सख़्त मोड़ पर जब इमाम हुसैन[अ०] को मदीना छोड़ना पड़ा तो हज़रत ज़ैनब ने करबला के वाक़िए में अपना रोल अदा करने के लिए शिद्दत से ज़िम्मेदारी का एहसास किया और अपने बच्चों को लेकर भाई के साथ एक दुश्वार सफ़र तै किया, इस इरादे के साथ कि ज़रूरत पड़ी तो अपने बच्चों को भी राहे ख़ुदा में क़ुरबान कर दूँगी जबकि शौहर भी साथ नहीं है। आमतौर से औरतें ऐसा लम्बा सफ़र जिसमें वापसी की कोई मुद्दत तै न हो, शौहर के बिना नहीं करतीं लेकिन जनाबे ज़ैनब ने ज़िम्मेदारी के एहसास की वजह से सफ़र किया।

अली[अ०] की बेटी ने हर ज़िम्मेदारी क़ुबूल कर ली

आशूर के दिन वक़्त गुज़रने के साथ-साथ ज़िम्मेदारियाँ बढ़ती जा रही थीं ख़ास कर अस्रे आशूर के वक़्त जनाबे ज़ैनब को इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी दी गई जिसका तसव्वुर करके इन्सान कांप जाता है लेकिन अली[अ०] की बेटी ने किसी भी ज़िम्मेदारी को क़ुबूल करने से इन्कार नहीं किया।

क्या इस से बेहतर मुमकिन था?

जब ज़िम्मेदारियों को पूरा करने का वक़्त आया तो जनाबे ज़ैनब ने अपने किरदार को इस तरह अदा किया कि इन्सान इस किरदार के बारे में जितनी फ़िक्र करे उतनी ही जनाबे ज़ैनब की

अज़मत उभर कर सामने आती है और यह कहना पड़ता है कि जनाबे ज़ैनब ने करबला, कूफ़ा और शाम में जिस तरह अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा किया उस से अच्छी कोई सूरत मुमकिन ही नहीं थी।

जनाबे ज़ैनब पर सिर्फ़ बच्चों और औरतों को संभालने और इमाम सज्जाद[अ०] की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी नहीं थी बल्कि इमाम हुसैन[अ०] और शोहदा-ए-करबला के ख़ून की हिफ़ाज़त की भी ज़िम्मेदारी थी। वह ख़ून जो दीन की बक़ा और नबियों की मेहनतों की हिफ़ाज़त का ज़िम्मेदार था।

ज़ैनब[अ०] :आशूर से पहले और आशूर के बाद

जनाबे ज़ैनब[अ०] के ज़िम्मेदाराना रोल का अंदाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि जब हम आशूर से पहले और आशूर के बाद की ज़ैनब[अ०] को देखते हैं तो मालूम होता है कि आशूर की ज़िम्मेदारियाँ उनके अंदर किसी बड़ी तबदीली की वजह बनती हैं।

आशूर से बहुत पहले का ज़िक्र नहीं है बल्कि ख़ुद शबे आशूर में जनाबे ज़ैनब[स०] की हालत यह है कि इमामे सज्जाद[अ०] से नक़्ल हुई रिवायत के मुताबिक़ शबे आशूर में जनाबे ज़ैनब[स०] ने इमाम हुसैन[अ०] को कुछ शेर पढ़ते हुए सुना जिनमें मौत का तज़किरा था। इन अशआर को सुनकर जनाबे ज़ैनब[स०] रोती हुई इमाम हुसैन[अ०] के ख़ेमे में आईं और थोड़ी सी बातचीत करने के बाद जब भाई की शहादत का यक़ीन हो गया तो इस तरह फ़रियाद बुलंद की कि ग़श खाकर ज़मीन पर गिर पड़ीं।

यही ज़ैनब जो शबे आशूर सिर्फ़ भाई की शहादत की ख़बर सुनकर बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर जाती हैं, अस्रे आशूर ज़िम्मेदारी क़ुबूल करने के बाद अपनी नज़रों से भाई का कटता हुआ गला भी देखती हैं लेकिन बेहोश नहीं होतीं, लाशों की पामाली का मंज़र देखती हैं लेकिन बेहोश नहीं होतीं। शामे ग़रीबाँ में जलते हुए ख़ेमे देखकर सिर्फ़ बेहोश ही नहीं होतीं बल्कि अपनी ज़िम्मेदारी का हक़ इस तरह अदा करती हैं कि बीमार इमाम को जलते हुए ख़ेमे से निकाल कर बाहर लाती हैं और सिर्फ़ इतना ही नहीं बल्कि जले हुए ख़ेमों में बैठ कर नमाज़े शब भी अदा करती हैं क्योंकि ज़िम्मेदारियाँ जितनी बड़ी होती हैं उतनी ही ज़्यादा इन्सान को अल्लाह की मदद और उस से राब्ते की ज़रूरत होती है।

शामे ग़रीबाँ के बाद जनाबे ज़ैनब[स०] के इम्तेहान की मंज़िलें सख़्त होती गईं। वह शोहदा के बेकफ़न लाशे हों या कूफ़ा व शाम की मंज़िलें या इब्ने ज़ियाद व यज़ीद का दरबार लेकिन किसी भी मुक़ाम पर अली की बेटी पर ग़श तारी नहीं हुआ।

यक़ीनन बड़ी ज़िम्मेदारियाँ बड़ें इन्सानों को दी जाती हैं। नहीं मालूम अल्लाह की निगाह में हज़रत ज़ैनब का क्या मुक़ाम था कि आपको इतनी बड़ी ज़िम्मेदारियाँ दी गईं और इतने सख़्त इम्तेहानों से गुज़ारा गया। ●

वादा है हमारा

3 शाबान

सदाए कौनैन

मरहबा! सल्ले अला हो गया ज़ुहूरे मौला हुसैन[अ०]
आग़ोशे फ़ातिमा[स०] से हुसैन[अ०] आग़ोशे रिसालत में आए
हुसैन[अ०] देख के नाना को मुस्कुराते हैं
मगर यह क्या हुआ
चश्मे रसूले अकरम[स०] से ख़ुशी के वक़्त भी आँसू टपके जाते हैं
सवाल कर दिया ज़हरा[स०] ने ऐ मेरे बाबा!
उदास क्यों हुए, क्यों सोगवार है चेहरा
कहा रसूल ने ज़हरा! मैं ख़ुश हुआ
यह मेरा लाल मेरे दीन को बचाएगा
मैं रोया इसलिए ज़हरा
वतन से दूर अकेला, प्यासा, ग़रीबी में मारा जाएगा
और इस क़यामत में न मैं, न तू, न अली होंगे, न हसन होगा
न कोई प्यारा न कोई अपना होगा
किनारे नहर के गोर व बेकफ़न होगा
तड़प के पूछा नबी[स०] से हुसैन[अ०] की माँ ने
तो मेरे बाबा भला इस पे कौन रोएगा
कहा रसूल[स०] ने ज़हरा! न फ़िक्र कर बेटी
ख़ुदा की सिम्त से मौजूद एक क़बीला है
जो इसको रोएगा ता हशर उसका वादा है
जो न हुसैन[अ०] को भूलेगा, न हुसैन उसको भूलेगा
सारे जहाँ से मुसलसल सदा होगी...
हुसैन[अ०], हुसैन[अ०], हुसैन[अ०], हुसैन[अ०], हुसैन[अ०]
वादा है हमारा, या फ़ातिमा ज़हरा नहीं भूलेंगे हुसैना...

حسین (ع)

चेहलुम

चेहलुम के दिन दरअस्ल करबला में एक मूवमेन्ट की शुरुआत का दिन था। करबला के वाक़िए के बाद करबला के तपते हुए जंगल में इमाम हुसैन[अ०], उनके अहलेबैत[अ०] और उनके वफ़ादार साथियों की बेमिसाल क़ुरबानियों के बाद अहलेबैत[अ०] की औरतों और बच्चों को क़ैदी बना लिया गया लेकिन इसका नतीजा यह हुआ कि इन क़ैदियों ने करबला के पैग़ाम को दुनिया के कोने-कोने तक पहुंचा दिया।

हज़रत ज़ैनब[अ०] और इमाम सज्जाद[अ०] ने अपने ख़ुतबों से सच्चाईयों को दुनिया वालों के सामने पेश करके करबला के वाक़िए के मक़सदों, उसके अलग-अलग पहलुओं और उसकी इंक़ेलाबी सोच को जहां-जहां भी उन्हें मौक़ा मिला, फैला दिया।

एक घुटे हुए सियासी दौर की ख़ासियत यह होती है कि उस घुटन भरे माहौल में लोगों में इस बात की जुरअत नहीं होती कि उन्होंने जिन सच्चाईयों को समझा है उनके मुताबिक़ अमल कर सकें। इसकी असल वजह यह है कि पहले ज़ुल्म की बुनियादों पर क़ायम हुकूमती सिस्टम इस बात की इजाज़त नहीं देता कि लोग सच्चाईयों को समझें और अगर लोग उसकी मर्ज़ी और ख़्वाहिशों के ख़िलाफ़ उसे समझ भी जाएं तो ज़ालिम हुकूमतें उन्हें इस बात की क़तई इजाज़त नहीं देंगी कि जो कुछ उन्होंने सोचा और समझा है उस पर अमल कर सकें।

कूफ़ा व शाम जैसे शहरों में जहां सियासी दबाव और घुटन का माहौल था। करबला से इन शहरों के बीच रास्ते में लोगों की एक बड़ी तादाद हज़रत ज़ैनब[अ०] और इमाम सज्जाद[अ०] की ज़बानी या उन क़ैदियों की हालत देखकर बहुत कुछ समझ गई थी लेकिन किसी में यह हिम्मत नहीं थी कि वह ज़ुल्म व सितम के उस हुकूमती सिस्टम के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाए और उस सियासी दबाव के दौर में जो कुछ उसने सुना और समझा है उसे अपनी ज़बान पर लाए! यह तमाम सच्चाईयां एक फंदे की शक्ल में मोमिनों के गले में फंसी हुई थीं। लेकिन यह एहसास और फंदा चेहलुम के दिन ढीला पड़ गया और तूफ़ान बनकर करबला में फूटा।

चेहलुम के दिन अहलेबैत का करबला में आना

सैय्यद बिन ताऊस और दूसरे बड़े उलमा ने लिखा है कि जब क़ैदियों का क़ाफ़िला हज़रत ज़ैनब[अ०] और इमाम सज्जाद[अ०] के साथ चेहलुम के दिन करबला पहुंचा तो वहां सिर्फ़ रसूल अल्लाह[स०] के एक बहुत बड़े सहाबी हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी और अतिया औफ़ी ही मौजूद नहीं थे बल्कि क़बीला बनी हाशिम के कई लोग वहां इमाम हुसैन[अ०] की क़ब्र के पास मौजूद थे और उन सब ने इस क़ाफ़िले का इस्तेक़बाल किया था।

शायद हज़रत ज़ैनब[अ०] ने शाम से मदीने जाते वक़्त करबला जाने पर ज़ोर इसीलिए दिया था ताकि अरबईन के दिन करबला में यह छोटा सा मगर हमेशा याद रखा जाने वाला वाक़िआ पेश आ सके।

कुछ लोगों ने इस बात को बहुत दूर की बात कहा है कि यह कैसे हो सकता है कि क़ैदियों का यह क़ाफ़िला शाम से करबला तक इमाम हुसैन[अ०] के चेहलुम के दिन पहुंच जाए। आयतुल्लाह क़ाज़ी शहीद ने इस बारे में एक तफ़सीली बहेस की है और यह बात साबित की है कि ऐसा हुआ है। बहेरहाल जो कुछ उलमा ने बयान किया है वह इस तरह से है, ''जब हज़रत ज़ैनब[अ०] और अहलेबैत[अ०] के दूसरे लोग अरबईन के दिन करबला में पहुँचे तो वहां अतिया औफ़ी, जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी और बनी हाशिम के कुछ लोग मौजूद थे।''

यह सब हक़ीक़त में उस मक़सद तक पहुँचने का सुबूत है जो इमाम हुसैन[अ०] और उनके असहाब व अहलेबैत[अ०] की शहादतों की वजह से मुमकिन हो सका था यानी करबला की आलमी और इंक़ेलाबी सोच को लोगों तक पहुंचाना और उन्हें यह ताक़त व हिम्मत देना कि वह ज़ुल्म की आंखों में आंखें डालकर बात कर सकें।

इसी वाक़िए के बाद से ही ''क़ियामे तव्वाबीन'' यानी तौबा करने वालों के इंक़ेलाब की शुरूआत हो गई थी। वैसे तव्वाबीन के मूवमेंट का ख़ात्मा कर दिया गया था लेकिन उसके कुछ ही दिनों बाद कूफ़े में हज़रत मुख़तार और दूसरे बहादुरों ने बग़ावत कर दी जिसका नतीजा बनी उमय्या के ज़ालिमाना हुकूमती सिस्टम के ख़ात्मे के तौर पर सामने आया। क़ियामे मुख़तार के बाद 'मरवानियों' के सिलसिले की शुरुआत हुई और इस दौर में भी यह जंग जारी रही। यह सब इमाम के चेहलुम की ख़ुसूसियतें हैं। इसीलिए अरबईने हुसैनी में सच्चाईयों को बयान करने की जुरअत, अमल और शहादतों के मक़सदों को अमली करने की ताक़त मौजूद है। ●

اربعین حسینی

माँ-बाप के हक़

मौलाना मीसम ज़ैदी

एक शख़्स अपनी माँ को पीठ पर सवार करके ख़ाना-ए-काबा का तवाफ़ करा रहा था कि उसकी नज़र रसूले इस्लाम[स॰] पर पड़ी। उसने आप[स॰] से सवाल किया, ''क्या मैं इस काम के ज़रिए अपनी माँ के हक़ों को अदा कर पाया हूँ?'' आप[स॰] ने फ़रमाया, ''बिल्कुल नहीं! तुम अपने इस काम के ज़रिए अपनी पैदाईश के वक़्त उसकी एक आह का हक़ भी अदा नहीं कर सकते।''

इस्लाम ने माँ-बाप के हक़ों को बड़ी अहमियत दी है और माँ-बाप की ख़िदमत को औलाद का फ़रीज़ा बताया है और जितना भी हो सके उनके हक़ों को पूरा करना औलाद की ज़िम्मेदारी बताया है। इसलिए उनको राज़ी रखना औलाद का अख़लाक़ी और शरई फ़रीज़ा है।

क़ुरआने मजीद में साफ़-साफ़ इरशाद हो रहा है, ''ख़ुदा की इबादत करो, किसी को उसका शरीक क़रार न दो और अपने बाप और माँ के साथ अच्छा बर्ताव करो।''

इसके अलावा भी क़ुरआने मजीद की दूसरी आयतें माँ-बाप की अज़्मत बताती हैं। जैसे सूरए इसरा आयत/२३ में है, ''आपके परवरदिगार का फ़ैसला है कि उसके अलावा और किसी की इबादत न करना और माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव करना और अगर तुम्हारे सामने उन दोनों में से कोई एक या दोनों बूढ़े हो जाएं तो उनसे उफ़ भी न कहना और उन्हें झिड़कना भी नहीं और उनसे हमेशा मेहरबानी के साथ बातचीत करते रहना।''

यह सच है कि जब तक इंसान का बचपना रहता है उसके लिए अकेली पनाह माँ की गोद ही हुआ करती है कि माँ अगर मारती भी है तब भी बच्चा माँ ही को पुकारता है लेकिन जैसे-जैसे उसकी अक़्ल बढ़ती है ख़ुद को सबसे ज़्यादा समझदार समझने लगता है और हो भी सकता है कि औलाद मां-बाप से ज़्यादा पढ़ी-लिखी और समझदार बन जाए लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि जिसने तुम्हें इस मंज़िल तक पहुँचाया उसकी अज़्मत किसी वक़्त भी तुम्हारी नज़रों में कम हो जाए। अब इंसान जब ख़ुद को अक़्लमंद समझने लगता है तो हर वह बात जो उसकी अक़्ल को नहीं भाती उसका इन्कार कर देता है। ख़ास कर किसी बूढ़े इंसान की नसीहत जवानों को आसानी से हज़्म नहीं होती। शायद इन्हीं नेचुरल बातों की बुनियाद पर ख़ुदा ने हुक्म दिया हो, ''और जब वह बूढ़े हो जाएं तो उन्हें उफ़ भी न कहना''।

किसी शख़्स ने इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] से पूछा, ''ऐ रसूल के बेटे! आख़िर क़ुरआने मजीद में ''उफ़'' ही क्यों इस्तेमाल किया गया है?'' तो आपने फ़रमाया, ''चूँकि बेज़ारी का इज़हार करने के लिए सबसे छोटा लफ़्ज़ यही हो सकता था इसीलिए उफ़ का इस्तेमाल किया गया। अगर बेज़ारी का इज़हार करने के लिए इस से छोटा भी कोई लफ़्ज़ होता तो उसको इस्तेमाल किया गया होता।''

माँ-बाप के एहतेराम के लिए न सिर्फ़ इस्लाम ही ने ज़ोर दिया है बल्कि हर मज़हब और क़ौम ने माँ-बाप के एहतेराम की तालीम दी है लेकिन इस सिलसिले में जिस तरह इस्लामी टीचिंग्स पाई जाती हैं उसकी मिसाल किसी और मज़हब में नहीं मिलती। इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ॰] फ़रमाते हैं, ''ख़ुदा ने तीन कामों के लिए किसी को भी मुख़ालेफ़त करने का हक़ नहीं दिया हैः अमानत का पलटाना चाहे वह किसी अच्छे शख़्स की हो या बुरे की। वादे को पूरा करना चाहे वह अच्छे लोगों के साथ किया हो या बुरे लोगों के साथ। माँ-बाप के साथ नेकी करना चाहे वह अच्छे हों या बुरे।''

इस्लामी टीचिंग्स सिल-ए-रहम (मेल-जोल) के लिए बहुत ज़ोर देती हैं ख़ास तौर से माँ-बाप के साथ नेकी करने को वाजिब बताया गया है और उनके साथ सिल-ए-रहम न करने को तन्हाई और ज़िल्लत का सबब बताया है। इमाम अली रज़ा[अ॰] माँ-बाप की अज़्मत के सिलसिले में फ़रमाते हैं, ''ख़ुदावंदे आलम ने अपने और माँ-बाप का शुक्र अदा करने का हुक्म दिया है। जो शख़्स माँ-बाप का शुक्रिया अदा नहीं करता हक़ीक़त में वह ख़ुदा का भी शुक्र अदा नहीं करता।'' [1]

क़ुरआने मजीद में मां-बाप के लिए इस्तेग़फ़ार करने का हुक्म दिया गया है, ''परवरदिगार! मेरे और मेरे माँ-बाप के गुनाहों को बख़्श दे''।

यहाँ तक कि माँ-बाप अगर काफ़िर हों तब भी इस्लाम उनके एहतेराम को मानता है, ''अगर वह दोनों (माँ-बाप) कोशिश करें कि तुम मेरा शरीक मानो जिसका तुम्हें इल्म नहीं (बल्कि तुम जानते हो कि यह बात ग़लत है) तो ऐसी सूरत में उनकी इताअत न करना लेकिन इस दुनिया में उनके साथ नेक बर्ताव करना।''

यानी अगर वह शिर्क को मानने का हुक्म दें तो उसे न मानना क्योंकि माँ-बाप का यह हुक्म खुदा के हुक्म से टकरा रहा है लेकिन यह बात माँ-बाप के साथ एहसान छोड़ने की वजह नहीं बनना चाहिए बल्कि हर हाल में उनके साथ नेकी करने का हुक्म दिया गया है।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] ने फ़रमाया है, ''जब क़यामत के दिन जन्नत के पर्दों में से एक पर्दा हटाया जाएगा तो एक तरह के लोगों के अलावा हर जानदार उसकी ख़ुश्बू पाँच सौ साल के फ़ासले पर सूंघ सकेगा''। आप से पूछा गया, ''वह कौन लोग होंगे जो इसको नहीं सूंघ सकेंगे?'' आपने फ़रमाया, ''माँ-बाप की नाफ़रमानी करने वाले इस ख़ुश्बू को नहीं सूंघ सकेंगे''।

मां-बाप अगर अपनी औलाद के साथ बुरा सुलूक करें तब भी औलाद को यह हक़ नहीं है कि उनकी कोई मामूली सी भी तौहीन करे। इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] फ़रमाते हैं, ''जो शख़्स वालदैन पर गुस्से से निगाह डालता है चाहे उन्होंने उसके साथ ज़ुल्म ही किया हो, फिर भी खुदा उस शख़्स की नमाज़ को क़ुबूल नहीं करेगा''।

रसूले इस्लाम[स॰] फ़रमाते हैं, ''तीन तरह के लोग जन्नत की ख़ुश्बू सूंघने की उम्मीद न रखें:-

1- शराब पीने वाले चाहे उन्होंने एक क़तरा शराब ही क्यों न पी हो।

2- नमाज़ न पढ़ने वाले चाहे एक रकअत ही क्यों न छोड़ी हो।

3- माँ-बाप से आक़ हो जाने वाले चाहे एक लम्हे के लिए भी आक़ हुए हों।''

हिस्ट्री में मिलता है कि हमारे नबी हज़रत मूसा[अ॰] खुदा से राज़ो नियाज़ करने में मशग़ूल थे कि आपकी आँखों ने अजब मंज़र देखा आपने देखा कि अर्शे इलाही के साए में एक शख़्स बैठा हुआ है। जनाबे मूसा[अ॰] ने खुदा से सवाल किया, ''ख़ुदाया! आख़िर यह कौन है कि इस पर तेरे अर्श का साया पाया जाता है और इसे यह अज़ीम नेमत मिली?'' ख़ुदावंदे आलम ने फ़रमाया, ''इस शख़्स में दो ख़ूबियाँ पाई जाती थीं: अपने माँ-बाप के साथ नेकी करता था और यह दूसरों की बात नहीं करता था और इसी की बुनियाद पर वह लोगों के बीच में नहीं जाया करता था''। ख़ुदावंदे आलम ने उसकी इन दो ख़ुसुसियतों की वजह से अज़्मत दी है।

दुनिया में ऐसे वाक़िए बहुत देखने में आते हैं कि अगर औलाद पढ़ लिखने के बाद किसी अच्छे मुक़ाम और पोस्ट तक पहुँच जाती है और फिर माँ-बाप में से कोई उसके पास आ जाता है तो औलाद उन्हें अपना माँ-बाप बताने में भी शर्म महसूस करने लगती है और बहानेबाज़ी करके कभी झूठ का सहारा लेती और कह दिया करती है कि यह हमारे अज़ीज़ हैं या कुछ और या हक़ीक़ी रिश्ता बताने से बचती है।

परवरदिगार ने औलाद के हक़ में मां-बाप की दुआओं को बहुत ज़्यादा असरदार क़रार दिया है ख़ास तौर से माँ की दुआएं औलाद के हक़ में बहुत ज़्यादा असरअंदाज़ होती हैं।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि परवरदिगार ने तौहीद का हुक्म देने के साथ माँ-बाप की इताअत का भी हुक्म दिया है और उनकी ज़रूरतों को पूरा करना औलाद की ज़िम्मेदारी क़रार दिया है। अगर माँ-बाप ज़रूरतमंद न हों तब भी उनके साथ अच्छे अख़लाक़ से पेश आने का हुक्म दिया गया है। माँ-बाप के साथ एहसान करना नबियों का तरीक़ा रहा है।

हक़ों की अदायगी की स्टेजेस और मरहले पाए जाते हैं। पहले ख़ुदा का हक़, फिर माँ-बाप का हक़, फिर रिश्तेदारों का हक़, फिर मोहब्बत के मारे यतीमों का हक़ और इसके बाद मिस्कीनों का हक़ ज़िक्र किया गया है। यानी ख़ुदा के हक़ के फ़ौरन बाद मां-बाप के हक़ का तज़किरा किया गया है। कहीं ऐसा न हो कि हम दुनिया की किसी मामूली चीज़ को पा लेने के बाद मां-बाप के हक़ों से ग़ाफ़िल हो जाएं। वादों को पूरा करना और मां-बाप के हक़ों का अदा करना न सिर्फ़ शरई ज़िम्मेदारी है बल्कि इंसानियत का भी यही तक़ाज़ा है। मां-बाप के साथ नेकी करने की कोई हद तै नहीं है। जवानों का फ़रीज़ा है कि मां-बाप के साथ जितना हो सके उतनी इन्केसारी के साथ पेश आएं और हमेशा उनको राज़ी रखने की कोशिश करें चूँकि मां-बाप की मर्ज़ी में ही ख़ुदा की मर्ज़ी छिपी है।

1- अल-ख़िसाल/156

जब खुशियों का एक दरवाज़ा बंद हो जाता है तो एक दूसरा खुल जाता है...
लेकिन हम उसी बंद दरवाज़े को ही देखते रहते है और जो नया दरवाज़ा खुला है...
उसकी तरफ़ देखते भी नहीं !

हिजाब

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

बेशक मौजूदा ज़माने में जिसको कुछ लोगों ने फ़्रीडम ऑफ़ सेक्स का ज़माना कहा है और वेस्टर्न कल्चर से इम्प्रेस्ड लोगों ने इसको औरतों की आज़ादी का एक हिस्सा समझ लिया है, इसलिए ऐसे लोग पर्दे की बातों को सुन कर मुंह बनाते हैं और पर्दे को ओल्ड-फ़ैशंड और दिक़यानूसियत समझते हैं। लेकिन इस आज़ादी और गुमराही से जितनी बुराईयाँ बढ़ती जा रही हैं उतना ही पर्दे की बातों पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

हालांकि इस्लामी और मज़हबी समाज में बहुत से मसाएल हल हो चुके हैं और बहुत से सवालों का जवाब दिया जा चुका है, लेकिन क्योंकि यह मसला बहुत अहम है इसलिए इस मसले पर यानी हिजाब पर अभी और बहेस व बातचीत की ज़रूरत है।

क्या औरतों को देखने, सुन्ने और छूने का हक़ तमाम मर्दों को है और हर मर्द किसी भी औरत से जब चाहे यह लज़्ज़त हासिल कर सकता है या औरत से यह लज़्ज़तें उठाने का हक़ भी सिर्फ़ उनके शौहरों के पास है?

बहेस इसमें है कि औरतें खुलेआम अपने जिस्म के अलग-अलग हिस्सों की नुमाईश करती फिरें, जवानों के जज़्बात व शहवतों को भड़काती रहें और बहके हुए मर्दों की हवस का शिकार बनती रहें या यह मसाएल समाज से ख़त्म कर दिए जाएं और उनकी शादीशुदा ज़िंदगी को उनके शौहरों का हिस्सा समझा जाए?

इस्लाम इस दूसरी क़िस्म का तरफ़दार है और उसने हिजाब को इसीलिए वाजिब किया है। हांलाकि पश्चिमी मुल्कों और वेस्टर्न कल्चर से इम्प्रेस्ड लोग पहले नज़रिए के क़ायल हैं।

इस्लाम कहता है कि सेक्चुअल और देखने, सुनने और छूने की लज़्ज़त शौहर का हक़ है। उसके अलावा दूसरे किसी के लिए भी गुनाह और समाज के लिए नापाकी की वजह है।

हिजाब की फ़्लासफ़ी
कोई छुपी हुई चीज़ नहीं है, क्योंकिः

1- आम तौर पर बेपर्दा औरतों का बनाओ-सिंगार और नाज़ व अदाएं जवानों के जज़्बात को बराबर उभारती रहती हैं जिससे उनके जज़्बात भड़क उठते हैं और यह जज़्बात उनको तरह-तरह की बुराईयों तक ले जाते हैं जिसकी वजह से उनके अंदर साइकॉलोजिकल बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। इंसान कितना स्ट्रेस बर्दाशत कर सकता है? क्या साइकेट्रिस्ट यह नहीं कहते कि हमेशा इंसान में स्ट्रेस से बीमारियां पैदा होती हैं।

ख़ास तौर पर जब यह भी मालूम हो कि सेक्चुअल डिज़ायर्स इंसान की नेचुरल ज़रूरत है जिसकी वजह से हिस्ट्री में ऐसे बहुत से ख़तरनाक हादसे और वाक़ेए मिलते हैं जिनकी बुनियाद यही चीज़ थी। यहां तक कि कुछ लोगों का कहना है, ''कोई भी अहम वाक़ेआ ऐसा नहीं मिल सकता जिसमें औरत का हाथ न हो।''

हमेशा बाज़ारों और गली-कूचों में अपने जिस्म की नुमाइश करना और जज़्बात को भड़काना, क्या आग से खेलना नहीं है? और क्या यह अक़्लमंदी है?

इस्लाम तो यह चाहता है कि मुसलमान मर्द और औरत चैन व सुकून के साथ ज़िंदगी बसर करें और उनकी आंखें और कान ग़लत कामों से बचे रहें और किसी भी तरह के स्ट्रेस के शिकार न हों। पर्दे का एक फ़लसफ़ा यह भी है।

2- अलग-अलग मौक़ों पर होने वाले सर्वे इस चीज़ की गवाही देते हैं कि दुनिया भर में जब से बेपर्दगी और न्युडिटी बढ़ी है उसी वक़्त से तलाक़ों में भी रोज़-बरोज़ इज़ाफ़ा होता जा रहा है। जिस्म की नुमाइश इन्सान को अलग-अलग औरतों से रिलेशन पर उकसाती है इसलिए इन्सान हर रोज़ एक दिलबर को तलाश करता है तो दूसरे को अलविदा कहता हुआ नज़र आता है।

जिस समाज में हिजाब पाया जाता है (और इस्लामी शर्तों का लिहाज़ किया जाता है) उसमें यह रिश्ता सिर्फ़ मियां-बीवी में होता है और उनके एहसासात, इश्क़ और मुहब्बत एक दूसरे के लिए मख़सूस होते हैं।

लेकिन ''इस आज़ादी और नंगेपन के बाज़ार'' में जबकि औरत को सिर्फ़ एक 'सामान' बना दिया गया है तो जिसका जी चाहे Use कर सकता है फिर उनके लिए मियां-बीवी का अहदो पैमान और वादे कोई मतलब भी नहीं रखते। जिसकी वजह से बहुत सी शादियां मकड़ी के जाले की तरह बहुत जल्द ही जुदाई में बदल जाती हैं और बच्चे बे वारिस

हो जाते हैं।

3- बेहयाई का इतना आम हो जाना और नाजाएज़ औलादें पैदा होना, बेपर्दगी के नतीजे का एक मामूली सा नतीजा है, जिसके बारे में बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह मसला ख़ास तौर पर पश्चिमी मुल्कों में इतना साफ़ है जिसके बारे में बात करना सूरज को चिराग़ दिखाना है। सभी लोग इस तरह की चीज़ों को मीडिया में आए दिन सुनते रहते हैं।

हम यह नहीं कहते कि बेहयाई और नाजाएज़ बच्चों की पैदाईश की सिर्फ़ एक ही वजह है, हम यह भी नहीं कहते कि वेस्टर्न माहौल और ग़लत सियासी मसाएल का इससे कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि हमारा कहना तो यह है कि बेहयाई, नंगापन और बेपर्दगी इसकी एक बड़ी वजह है।

बेहयाई और नाजाएज़ औलाद की पैदाइश समाज में ज़ुल्म व सितम और ख़ून-ख़राबे में इज़ाफ़े की वजह रहे हैं और आज भी हैं।

जिस वक़्त हम सुनते हैं कि एक रिपोर्ट के मुताबिक़ इंग्लैंड में हर साल पांच लाख बच्चे नाजाएज़ तरीक़े से पैदा होते हैं और जब हम सुनते हैं कि इंग्लैंड के बहुत से स्कॉलर्स ने हुकूमती लोगों को यह वार्निंग दी है कि अगर यह सिलसिला जारी रहा तो मुल्क के अमनो अमान को ख़तरा है तो हमें इस मसले की अहमियत का अंदाज़ा होने लगता है। उन्होंने अख़्लाक़ी और मज़हबी बुनियाद पर यह वार्निंग नहीं दी है बल्कि सिर्फ़ इस वजह से कि नाजाएज़ बच्चों ने समाज के अमन व अमान को ख़तरे में डाल दिया है क्योंकि ज़्यादा तर क्राइम्स में इन्हीं लोगों का हाथ पाया जाता है।

जो लोग दीन व मज़हब को भी नहीं मानते, इस बुराई के फैलने से वह भी परेशान हैं। इसलिए समाज में सेक्चुअल बुराईयों को और ज़्यादा फैलाने वाली चीज़ समाज के अमन के लिए ख़तरा मानी जाती है और इसके ख़तरनाक नतीजे हर तरह से समाज के लिए नुक़सानदेह हैं।

वह स्कालर्स जिन्होंने तरबियत और परवरिश जैसे सब्जेक्ट्स पर रिसर्च की है उनका भी मानना है कि जिन कालेजों में लड़के और लड़कियां एक साथ पढ़ते हैं या जिन इदारों में मर्द और औरत एक साथ काम करते हैं और उनको हर तरह की आज़ादी हासिल होती है, ऐसे कालेजों में पढ़ाई कम होती है और इदारों में काम कम होता है और ज़िम्मेदारी का एहसास भी कम पाया जाता है।

4- बेपर्दगी और नंगापन औरत की अज़्मत और बुलंदी को भी हरा देता है। अगर समाज औरत को बेपर्दा और बे लिबास देखना चाहेगा तो फ़ितरी बात है कि हर रोज़ उसकी आराईश, मेकअप, ग्लेमर और ख़ूबसूरती की डिमांड बढ़ती जाएगी और उसकी नुमाईश में इज़ाफ़ा होता जाएगा। जब औरत सेक्चुअल एटरेक्शन की बुनियाद पर रोज़मर्रा चीज़ों के एडर्वटाइज़्मेंट का ज़रिया बन जाएगी, वेटिंग रूम के डेकोरेशन का एक हिस्सा होगी और टूरिस्टों और मेहमानों का ध्यान खींचने का ज़रिया बन जाएगी तो समाज में उसकी हैसियत एक खिलौने या बेक़ीमत माल की तरह गिर जाएगी। साथ ही उसकी शान के मुताबिक़ इंसानी वैल्यूज़ का भी ख़ात्मा हो जाएगा। उसकी वेल्यु सिर्फ़ उसकी जवानी, ख़ूबसूरती और नुमाईश तक बंध कर रह जाएगी। इस तरह से वह कुछ नापाक और फ़रेबी इंसान नुमां दरिंदों की हवस पूरी करने के लिए एक रास्ता बनकर रह जाएगी।

ऐसे समाज में एक औरत अपनी अख़्लाक़ी वेल्यूज़ यानी इल्म व मारफ़त और बसीरत को कैसे हासिल कर सकती है और किसी बुलंद मुक़ाम तक कैसे पहुँच सकती है?

वाक़ई यह बात कितनी तकलीफ़ देह है कि पश्चिमी मुल्कों और पश्चिमी सोच से इम्प्रेस्ड मुल्कों में औरत का मुक़ाम कितना गिर चुका है। ख़ुद हमारे मुल्क ईरान में इंक़ेलाब से पहले यह हालत थी कि नाम, शोहरत, दौलत और हैसियत उन कुछ नापाक और बेलगाम औरतों के लिए थी जो 'फ़नकार' और 'आर्टिस्ट' के नाम से मशहूर थीं, जहां वह क़दम रखती थीं उस गंदे माहौल के ज़िम्मेदार उनके लिए आंखें बिछाते थे और उन्हें ख़ुश आमदीद कहते थे।

अल्लाह का शुक्र है कि ईरान में वह सब गंदगी ख़त्म कर दी गई और औरत अपने उस दौर से निकल आई है जिसमें उसे रुसवा कर दिया गया था और वह कल्चरल खिलौना और बेक़ीमत साज़ व सामान बन कर रह गई थी। अब उसने अपना मुक़ाम व विक़ार दोबारा हासिल कर लिया है और ख़ुद को पर्दे से ढांप लिया है लेकिन ऐसा नहीं है

कि वह घर के अंदर क़ैद हो कर रह गई हो, बल्कि समाज के सारे फ़ाएदेमंद और इस्लाही कामों में यहां तक कि मैदाने जंग में भी उसी इस्लामी हिजाब के साथ बड़ी-बड़ी ख़िदमतें अंजाम दे रही है।

हिजाब के मुख़ालिफ़ों के ऐतराज़

हम यहाँ पर हिजाब के मुख़ालिफ़ों के ऐतराज़ों को बयान कर रहे हैं और खुलासे के साथ उनके जवाबों को भी पेश करेंगें:

1- हिजाब के मुख़ालिफ़ों का सबसे बड़ा ऐतराज़ यह है कि समाज में लगभग आधी औरतें होती हैं लेकिन हिजाब की वजह से समाज की इतनी बड़ी तादाद गोशा नशीन हो जाएगी और जिसकी वजह से वह हर मैदान में पिछड़ जाएगी। ख़ास तौर से कारोबारी और इकोनॉमिक मैदान में ज़्यादा से ज़्यादा लोगों की ज़रूरत होती है, अगर औरतें पर्दे में रहेंगी तो इकोनॉमिक फ़ील्ड में उनसे फ़ायदा नहीं उठाया जा सकता। इसके अलावा कल्चरल एकटिविटीज़ में और दूसरे समाजी कामों में भी उनसे कोई फ़ाएदा नहीं उठाया जा सकता। इस तरह वह समाज में सिर्फ़ एक बोझ बन कर रह जाएगी और समाज को उन्हें ढोना पड़ेगा।

लेकिन जिन लोगों ने यह ऐतराज़ किया है वह कुछ चीज़ों को भूल गए हैं या उन्होंने जान-बूझ कर भुला दिया है क्योंकि:

पहली बात : यह कौन कहता है कि इस्लामी हिजाब की वजह से औरतें गोशा नशीन और समाज से दूर हो जाएंगी? अगर पिछले ज़माने में इस तरह की दलील लाने में मुश्किल थी तो आज ईरान के इस्लामी इंक़ेलाब ने साबित कर दिखाया है कि औरतें इस्लामी हिजाब में रहकर भी समाज के लिए बहुत से काम अंजाम दे सकती हैं क्योंकि हमने खुद अपनी आंखों से देखा है कि औरतें इस्लामी हिजाब के साथ समाज में हर जगह मौजूद हैं। आफ़िसों में, कारख़ानों में, सियासी मुज़ाहिरों में, रेडियो और टेलीवीज़न में, अस्पतालों में, क्लीनिकों में ख़ास तौर से जंग के दौरान जंगी ज़ख़्मियों की मरहम-पट्टी और उनकी देख-भाल के लिए, स्कूल-कालेजों और यूनिवर्सिटियों में, दुश्मन के मुक़ाबले में, मैदाने जंग में... खुलासा यह कि हर मुक़ाम पर औरतों ने अपना रोल अदा किया है।

मुख़तसर यह कि मौजूदा हालात खुद इस ऐतराज़ का मुँहतोड़ जवाब हैं। अगरचे हम पिछले ज़माने में इन जवाबों के लिए ''शायद'' की बातें करते थे (यानी क्या औरतें हिजाब में रह कर समाजी कामों को कर सकती हैं) लेकिन आज-कल हम देख रहे हैं और फ़लास्फ़र्स का कहना है कि किसी चीज़ के 'हो सकने' की दलील खुद उस चीज़ का हो जाना है। यह बात तो खुद रौशन है, इसके बयान करने की ज़रूरत नहीं है।

दूसरी बात : अगर इन चीज़ों से नज़र हटा ली जाए तो क्या औरतों के लिए घर में रहकर बच्चों की तरबियत करना और उनको फ़्युचर के लिए बेहतरीन इंसान बनाना ताकि समाज के लिए बेहतरीन और फ़ाएदेमंद हों, क्या यह एक बेहतरीन और अच्छा काम नहीं है?

जो लोग औरतों की इस ज़िम्मेदारी को पाज़िटिव और फ़ायदेमंद काम नहीं समझते, वह फिर एजुकेशन व तरबियत, सही व सालिम और पुर रौनक़ समाज की अहमियत से बेख़बर हैं। उन लोगों का गुमान है कि मर्द व औरत पश्चिमी मुल्कों की तरह आफ़िसों और कारख़ानों में काम करने के लिए निकल पड़ें और अपने बच्चों को ग़ैरों के रहमो करम पर छोड़ दें, या कमरे में बंद करके ताला लगा दिया जाए और उनको बचपने से ही क़ैद की सख़्ती का मज़ा चखा दिया जाए।

वह लोग इस चीज़ से बेख़बर हैं कि इस तरह

बरसी की मजलिस

बराए ईसाले सवाब

हुज्जतुल इस्लाम मौलाना

हैदर मेहदी ताबा सराह

12 Feb. 2012, 9:00 AM

इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमाब, लखनऊ

ज़ाकिरः

अमीरूल उलमा मौलाना

हमीदुल हसन साहब क़िबला

मुल्तमेसीनः पसमान्देगान

बच्चों की शख़्सियत और अहमियत ख़त्म हो जाती है, बच्चों में इंसानी मुहब्बत पैदा नहीं होती, जिससे समाज को ख़तरा पैदा हो जाता है।

2- पर्दे के मुख़ालिफ़ों का दूसरा ऐतराज़ यह है कि पर्दे के लिए बुरक़े या चादर के साथ समाजी कामों को नहीं किया जा सकता, ख़ासतौर से आज जबकि मार्डन गाड़ियों का दौर है, एक पर्देदार औरत अपने को संभाले या अपनी चादर को या अपने बच्चे को या अपने काम में लगी रहे?

लेकिन यह ऐतराज़ करने वाले इस बात से बेख़बर हैं कि हिजाब हमेशा बुरक़ा या चादर ही से नहीं होता बल्कि हिजाब के मायने हैं औरत का लिबास। अगर चादर से पर्दा हो सकता है तो बेहतर है वरना अगर मुमकिन नहीं है तो सिर्फ़ उसका लिबास और कपड़े भी हिजाब के लिए काफ़ी हैं यानी सिर्फ़ स्कॉफ़ के ज़रिए अपने सर के बाल और गर्दन वग़ैरा को छुपाए रखें।

हमारे देहाती इलाक़ों की औरतों ने खेती-बाड़ी के कामों में अपना पर्दा बाक़ी रखते हुए यह साबित कर दिखाया है कि एक बस्ती की रहने वाली औरत इस्लामी पर्दे के साथ बहुत से अहम काम कर सकती है बल्कि मर्दों से बेहतर कर सकती हैं और उनका हिजाब उनके काम में रुकावट भी नहीं बनता।

3- उनका एक ऐतराज़ यह भी है कि पर्दे की वजह से मर्द और औरत में एक तरह से फ़ासला हो जाता है जिससे मर्दों में देखने की लालच भड़कती है और उनके जज़बात और भड़क जाते हैं क्योंकि ''जिस चीज़ से इंसान को रोका जाता है वह उसकी तरफ़ और दौड़ता है।''

इस ऐतराज़ का जवाब यह है कि आज के ईरानी समाज का शाह के ज़माने से मुक़ाबला किया जाए। आज हर इंस्टीट्यूट में पर्दा है, जबकि शाह के ज़माने में औरतों को पर्दा करने से रोका जाता था।

उस ज़माने में हर गली-कूचे में बेहयाई के अड्डे थे, घरों में बहुत ही अजीब व ग़रीब माहौल पाया जाता था, तलाक़ बहुत ज़्यादा थी, नाजाएज़ औलाद की तादाद भी ज़्यादा थी, वग़ैरा-वग़ैरा।

हम यह नहीं कहते कि अब यह तमाम चीज़ें बिल्कुल ख़त्म हो गई हैं लेकिन बेशक इसमें बहुत कमी हुई है, हमारे समाज में बहुत सुधार आया है और अगर ख़ुदा का फ़ज़्ल ऐसे ही रहा और यही हालात बाक़ी रहे और दूसरी मुश्किलें ख़त्म हो गईं तो हमारा समाज इस बुराई से बिल्कुल पाक हो जाएगा और औरत की अहमियत उजागर होती जाएगी। ●

हिजाब : पिछड़ापन की निशानी या...

■ सफ़ीना अरफ़ात फ़ातिमा

यूरोपी मुल्कों में हिजाब पर पाबंदी के बारे में मीडिया में बहुत दिनों ख़बरें आ रही हैं। मीडिया 'हिजाब' को मुस्लिम औरतों की आज़ादी में रुकावट के तौर पर पेश करता है। जबकि हक़ीक़त यह है कि पर्दा या मुकम्मल लिबास, मुस्लिम औरतों को विक़ार और सेक्योरिटी देता है। और उसका इस्तेमाल करके वह आज़ादी और भरोसे के साथ बाहरी दुनिया में हिस्सा ले सकती हैं।

क़ुरआन ने लिबास को सतरपोशी, ज़ीनत और हिफ़ाज़त का ज़रिया क़रार दिया है, ''ऐ आदम की औलाद! हम ने तुम्हारे लिए लिबास नाज़िल किया है जिससे अपनी शर्म गाहों का पर्दा करो और ज़ीनत का लिबास भी दिया है।'' (सूरए आराफ़/26)

सतरपोशी के अलावा लिबास को ज़ीनत का ज़रिया भी बताया गया है। औरतें अपनी ज़ीनत के लिए रेशमी कपड़े पहन सकती हैं। उन्हें सिर्फ़ बारीक और चुस्त लिबास पहनने से मना किया गया है। उनके लिए यह ज़रूरी है कि वह जब नामहरमों के बीच हों तो उनका सारा जिस्म चादर में लिपटा हुआ हो और उनकी जिस्मानी साख़्त ज़ाहिर न हो। यह सब उनकी हिफ़ाज़त और सलामती के लिए है, उन्हें क़ैद करने के लिए नहीं।

औरतें चाहे शलवार क़मीज़ पहनें या कोई और माडर्न डिज़ाइन का लिबास, इस बात को ज़रूर याद रखें कि उनका चुना हुआ लिबास उनके सारे जिस्म को छुपाए और वह बा विक़ार, शाइस्ता और तहज़ीब याफ़्ता नज़र आएं। सही सोच वाली औरतें बख़ूबी जानती हैं कि उन्हें क्या पहनना चाहिए और क्या नहीं? कौन सा लिबास उन्हें ख़तरे में डाल सकता है और कौन सा लिबास उन्हें हिफ़ाज़त दे सकता है? तरक़्क़ी और माडर्निज़्म से हाथ मिलाते हुए 'हिजाब' को कहीं बहुत पीछे छोड़ आने वाली वेस्टर्न स्टाईल वाले लिबास पहनने वाली औरतें यह नहीं सोचतीं कि वह अपने विक़ार को ख़ुद ही ख़ाक में मिला रही हैं। अपनी अहमियत को गंवा रही हैं, अपना वज़न कम कर रही हैं। आज़ादी और बराबरी का नशा यूं उनकी सोचने और समझने की सलाहियत पर सवार है कि वह यह जान ही नहीं पातीं कि जिस दीन से उनका ताल्लुक़ है वह उनकी आज़ादी को नहीं छीन रहा है बल्कि उन्हें एक बा-विक़ार, बाइज़्ज़त ज़िंदगी दे रहा है। अगर कुछ पाबंदियां लगाई गई हैं तो सिर्फ़ उनकी सलामती और हिफ़ाज़त के लिए, उनकी पसंद और ख़्वाहिशों पर कोई रोक नहीं है। बस वह शाइस्तगी से बाहर न निकलें।

शाइस्ता लिबास को पिछड़ेपन की निशानी के तौर पर देखने वाला मीडिया बेहयाई और आज़ादी के फ़र्क़ को नहीं समझ सकता। आज बेहयाई को आज़ादी का दूसरा नाम दे दिया गया है। अगर कोई अख़्लाक़ी वेल्युज़ की बात करता है तो उसे आज़ादी का मुख़ालिफ़ समझ लिया जाता है। ऐसी आज़ादी जो इंसानों को हैवानों की सफ़ में ख़ड़ा कर दे, तरक़्क़ी है या पिछड़ापन? ऐसा लिबास जो जिस्म को छुपाने के बजाए उसे खुला रखता हो, क्या उसे एक तहज़ीब याफ़्ता समाज क़ुबूल कर सकता है?

औरतों को आज़ादी के नाम पर ज़िल्लत व रुसवाई से दो चार करने वाला समाज ज़्यादा तरक़्क़ी याफ़्ता है या वह मुस्लिम समाज जो औरतों को 'आबगीने' की तरह क़ीमती मानकर उसकी हिफ़ाज़त को सबसे ऊपर रखता है।

कांच की नाज़ुक व नफ़ीस चीज़ों के लिए एक ख़ास पैकिंग की जाती है, यह पैकिंग उन चीज़ों के क़ीमती और नाज़ुक होने का पता देती है। इसी तरह औरतों के लिए मुकम्मल लिबास उनकी क़द्र व क़ीमत को कम नहीं करता बल्कि उन्हें 'ख़ास' बनाता है। उन्हें एक बाइज़्ज़त और बुलंद मुक़ाम अता करता है। ●

शादी शुदा ज़िंदगी

■ बतूल अज़रा फ़ातिमा

मर्द और औरत का चोली-दामन का साथ है। दोनों के काम और जिस्म की बनावट बिल्कुल अलग-अलग हैं मगर फिर भी इन दोनों का एक-दूसरे के बिना गुज़ारा नहीं हो सकता। एक के बिना दूसरा कुछ भी नहीं है। दोनों ज़िंदगी की गाड़ी के दो पहिये हैं जिनमें से अगर एक ख़राब हो जाए तो दूसरा बेकार हो जाता है।

हिन्दू शास्त्रों में औरत को मर्द का आधा जिस्म माना गया है। उधर एडवर्ड कारपेंटर ने लिखा है, ''दुनिया में हर इन्सान के लिए कोई न कोई ऐसा ज़रूर होना चाहिए जिससे वह खुला हुआ हो, जो उसके दिल का सारा हाल जानता हो, उसका हमदर्द हो, उसे प्यार करता हो, उसे उतना ही चाहता हो जितना कि वह खुद से मोहब्बत करता हो, जिसके साथ मेरे और तेरे का कोई सवाल न हो और वह औरत ही हो सकती है।''

औरत आदम की औलाद की माँ है। जिस घर में अच्छी औरत हो वह घर खुशियों से भर जाता है। औरत टूटे हुए दिल को जोड़ने का काम करती है, दुखते हुए दिल को खिलती हुई कली बना देती है, औरत के साथ खुशियाँ दुगनी हो जाती हैं। वह घर जिसमें औरत न हो, उसमें मर्द को किसी भी तरह सुकून नहीं मिल सकता।

ग़ैर शादीशुदा लोग ज़्यादातर घमंडी, खुदग़र्ज़, काहिल, लापरवाह, ग़ैर ज़िम्मेदार और चिड़चिड़े होते हैं। उसके मुक़ाबले में शादी-शुदा मर्द रहमदिल और नर्म मिज़ाज होते हैं। बीवी-बच्चों के उनकी ज़िंदगी में आ जाने से उनके अंदर कई कैरेक्टर डेव्लप हो जाते हैं जैसे कि बच्चों से पहले वह सिर्फ़ अपने बारे ही में सोचते थे लेकिन बच्चों के बाद यही माँ और बाप सबसे पहले बच्चों के लिए, फिर बाद में अपने लिए फ़िक्र करते हैं। हर बात में पहले बच्चों की ख़ुशी और उनकी ज़रूरतों को पूरा करते हैं। बच्चे अपने माँ-बाप को मोहब्बत करना, ईसार करना और दूसरों के बारे में भी सोचना सिखा देते हैं।

शौहर और बीवी दोनों एक-दूसरे के लिए सहारा और अंधेरे में उजाला हैं। बेकन कहते हैं, ''बीवी जवानी में हमारी महबूबा, अधेड़ उम्र में हमारी हमदर्द और बुढ़ापे में हमारी नर्स होती है''। शादीशुदा ज़िंदगी के बहुत ज़्यादा फ़ायदे हैं। इसके उलट ग़ैर शादीशुदा नौजवानों में ऐसी कौन सी बुराई है जो पैदा नहीं हो सकती चाहे वह अख़लाक़ी हो, समाजी हो, जिस्मानी हो या फिर रूहानी। इसलिए इस्लाम ने जल्दी शादी करने पर ज़ोर दिया है ताकि इन्सान बहुत सी बीमारियों और बुराईयों से दूर रह सके। रसूले खुदा[स॰] ने फ़रमाया है, ''जिसने शादी कर ली उसने अपना आधा दीन बचा लिया।''

शादी न होने से नौजवान औरतों को हिस्टीरिया भी हो जाता है। और अगर उनकी शादी कर दी जाए तो यह बीमारी खुद बखुद ख़त्म हो जाती है।

शादी का मक़सद यह नहीं है कि मर्द को अपनी ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए एक औरत और औरत को एक मर्द मिल जाए बल्कि इसका मक़सद इससे बहुत बुलंद है। शादी का अस्ल मक़सद यह है कि मर्द को औरत और औरत को मर्द की शक्ल में एक सच्चा साथी व हमदर्द मिल जाए और इन्सानी नस्ल भी बाक़ी रहे। खुदा ने इन्सान के अंदर अपोज़िट सेक्स से एटरेक्ट होने के जज़्बे को रखा है जो जवानी के दौर में शबाब पर होता है। यह जज़्बात क़ुदरती हैं और इस जज़्बे के तहेत इंसान शादी के बारे में सोचता है।

अगर देखा जाए तो मर्द और औरत अपने ज़ज्बात पूरे करने के बाद एक-दूसरे से अलग भी तो हो सकते हैं लेकिन क्या वजह है कि उनके इस रिश्ते में मज़बूती बढ़ती चली जाती है और उनके बीच में प्यार बढ़ता जाता है। इसका जवाब क़ुरआन ने दिया है कि 'दोनों के बीच में ख़ुदा ने मोहब्बत रखी है।' मियाँ-बीवी के बीच का यह रिश्ता उनमें मोहब्बत पैदा करता है और फिर सैक्स इस रिश्ते में चाश्नी का काम करता है। दोनों एक-दूसरे की रूहानी और जिस्मानी ज़रूरतों को पूरा करते हैं तो हमेशा ख़ुश रहते हैं।

अहम औरतें

जो औरत अपने शौहर की ख़िदमत को अपना फ़र्ज़ समझती हो और ख़ुदा के बाद अपने शौहर को भी राज़ी रखती हो।

जो ख़ुद तकलीफ़ें उठाकर भी अपने शौहर को आराम पहुँचाने की कोशिश करती हो।

जो माँ-बाप, भाई-बहन और दूसरों के मुक़ाबले में अपने शौहर की तरफ़दारी करती हो। साथ ही शौहर के घर वालों का एहतेराम करती हो।

जो शौहर के ग़ुस्से का नर्मी और मोहब्बत से जवाब देती हो। शौहर की मर्ज़ी के बग़ैर कभी किसी से मिलना-जुलना पसंद न करती हो।

जो शौहर पर अपनी फ़रमाइशों का बोझ न डालती हो। अपनी हैसियत से बढ़कर कुछ न ख़रीदती हो बल्कि अपनी चादर देखकर पाँव फैलाती हो।

जो अपने बच्चों को बाप का एहतेराम करना सिखाती हो।

जो अपनी पाकीज़गी की हिफ़ाज़त करती हो। अपने शौहर के लिए अपने सिंगार से लापरवाही न बरतती हो क्योंकि हर शौहर की यह ख़्वाहिश होती है कि उसकी बीवी ज़्यादा से ज़्यादा ख़ूबसूरत होकर उसके सामने आए।

ऐसी औरत ख़ुद भी ज़िंदगी का असली मज़ा हासिल कर सकती है और उसका शौहर भी।

अहम मर्द

जो मर्द पाकीज़ा ज़िंदगी बसर करता हो। कभी भी किसी ग़ैर औरत की तरफ़ आँख उठाकर भी न देखता हो।

जो अपनी बीवी की मदद करता हो और उसका ख़याल रखता हो।

जो बीवी की बुराइयाँ किसी के सामने न बताता हो।

जो बीवी को उसकी ग़लतियों पर माफ़ कर देता हो।

जो अपने बच्चों से कभी ऐसी बात न कहता हो जिससे बच्चों की नज़र में माँ की हैसियत कम होती हो।

जो अपनी ग़लती होने पर अपनी ग़लती मान लेता हो।

जो बीवी पर बेवजह पाबंदियाँ न लगाता हो और हमेशा नर्मी से पेश आता हो।

जो बीवी के रिश्तेदारों का एहतेराम करता हो।

जापानी दुल्हन को रुख़सती के वक़्त उसकी माँ की नसीहतें

ऐ मेरी बेटी!

1- तुम अब बेटी नहीं रहीं बल्कि ससुराल वालों की बहू हो गई हो।

2- शादी हो जाने से तुम किसी की मातहत और कोई तुम्हारा हाकिम हो गया है।

3- अपनी सास को हमेशा ख़ुश रखना। यह तुम्हारी ख़ुशियों का ख़ज़ाना होगा।

4- किसी से जलन मत करना और किसी से दुश्मनी भी मत रखना।

5- अगर तुम्हारा शौहर किसी वजह से ग़ुस्सा करे तो तुम उसके सामने ज़बान न चलाना बल्कि नर्मी और चापलूसी से उसके ग़ुस्से को कम कर देना।

6- घरेलू काम बड़े सलीक़े से करना और फ़ुज़ूल ख़र्ची मत करना।

7- किसी ज्योतिष और पंडित से कभी कोई मश्वरा मत करना।

8- सादा और कम क़ीमत मगर साफ़ और सुथारा कपड़ा पहनना।

9- कभी घमण्ड मत करना क्योंकि इससे इन्सान ज़लील हो जाता है।

10- अपने माँ-बाप की हैसियत वग़ैरा पर कभी भी घमण्ड मत करना और न ही इन बातों को कभी अपने शौहर या ससुराल वालों के सामने फ़ख़्र के अंदाज़ से बयान करना।

अरबी दुल्हन को रुख़सती के वक़्त उसकी माँ की नसीहतें

ऐ मेरी बेटी!

1- तुम हमेशा जितना भी कम क्यों न हो उसी में गुज़ारा करने की कोशिश करना और अपने शौहर के हुक्म को सर आँखों पर रखना।

2- शौहर की आँख और नाक का ख़्याल करना। ऐसा न हो कि उसकी आँख तुम्हारे किसी बुरे काम को देखे और उसकी नाक तुम्हारी तरफ़ से ख़ुश्बू की जगह बदबू सूँघे।

3- शौहर के खाने और सोने के वक़्त हमेशा महरबान रहना क्योंकि भूख इन्सान को ग़ुस्सा दिला देती है और नींद में डिस्टरबेंस भी ग़ुस्सा दिला देता है।

4- उसकी कभी बात मत टालना और उसके भेदों को हमेशा छुपाना।

5- जब वह दुःखी हो या परेशान हो तो कभी ख़ुश मत होना। और जब वह ख़ुश हो तो किसी परेशानी को ज़ाहिर मत करना। उसकी ख़ुशी में ख़ुश रहना।

6- उसकी ख़्वाहिशों को अपने ख़्वाहिशों से मत टकराने देना बल्कि उसकी ख़्वाहिशों को आगे रखना।

खुदा की राह में ख़र्च करना

■ फ़साहत हुसैन

क़ुरआन में जिन टॉपिक्स पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया गया है उनमें से एक ''इन्फ़ाक़'' यानी खुदा की राह में ख़र्च करना है। क़ुरआन ने अलग-अलग अंदाज़ में लोगों से इन्फ़ाक़ करने के लिए कहा है। कभी खुदा ने जो कुछ इंसान को दिया है उसमें से ख़र्च करने का हुक्म दिया है तो कहीं पर क़ुरआन ने उन लोगों का बहाना बयान किया है जो खुदा की राह में ख़र्च नहीं करना चाहते। कहीं पर यह बताया है कि किस चीज़ को खुदा की राह में ख़र्च करना है और सबसे अहम यह है कि कैसे ख़र्च करना है और आख़िर में ख़र्च करने के बाद कौन से काम नहीं करना चाहिएं जिन से नेक काम नेक ही रहे बुरा न बनने पाए।

खुदा ने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से इन्फ़ाक़ करो

क़ुरआन में हमें इस तरह की बातें बहुत सी जगहों पर मिल जाएंगी। सबसे पहले तो हमें यह जान लेना चाहिए कि क़ुरआन की नज़र में ''रिज़्क़'' का मतलब सिर्फ़ पैसा, दौलत और खाने पीने का सामान नहीं है। बल्कि खुदा ने अपने बंदे को जो कुछ भी दिया है वह रिज़्क़ है। हो सकता है कि यह दौलत हो, एजुकेशन हो या कोई फ़न और हुनर या फिर कोई और अच्छी क्वालिटी और स्किल। यह सब खुदा के ही रिज़्क़ हैं इसलिए खुदा हमें हुक्म दे रहा है कि इनमें से जो कुछ भी तुम्हें दिया गया है तुम उसे खुदा की ख़ातिर दूसरों को भी दो। क्योंकि तुम यह समझते हो कि यह दौलत, शोहरत, इज़्ज़त और इल्म तुम ही ने हासिल किया है और यह सिर्फ़ तुम्हारा है। ऐसा नहीं है बल्कि यह मेरा दिया हुआ है इसलिए इसे मेरी राह में ख़र्च करो।

इन्फ़ाक़ न करने का एक बहाना

''जब कहा जाता है कि जो रिज़्क़ खुदा ने दिया है उसमें से उसकी राह में ख़र्च करो तो यह कुफ़्फ़ार ईमान वालों से तंज़ करते हुए कहते हैं कि हम उन्हें क्यों खिलाएं जिन्हें खुदा चाहता तो खुद ही खिला देता। तुम लोग तो खुली हुई गुमराही में घिरे हुए हो।'' (1)

उनका एक बहाना यह है कि अगर खुदा चाहता तो खुद उन्हें दे देता अगर उनके पास कुछ नहीं है तो इसका मतलब यह है कि खुदा ही इनको कुछ नहीं देना चाहता है। खुदा ऐसे लोगों से कह रहा है कि खुदा ने यह दुनिया इसी तरह बनाई है कि अगर किसी के पास कुछ नहीं है तो दूसरा उसकी मदद करे। खुद तुम्हारे पास भी बहुत कुछ नहीं है और तुम दूसरों से मदद लेते हो इसलिए अगर तुम्हारे पास खुदा का रिज़्क़ है तो उसी ने तुमको यह ज़िम्मेदारी दी है कि उनको इस रिज़्क़ में से दो।

''जहाँ तक हो सके अल्लाह से डरो और उसकी बात सुनो और मानो और खुदा की राह में ख़र्च करो कि इसमें तुम्हारे लिए भलाई है और जो अपने ही नफ़्स की कंजूसी से बच जाए वही कामयाबी और निजात पाने वाला है।'' (2)

इसलिए यह मत समझो कि तुम जिसे खुदा का रिज़्क़ दे रह हो उसके साथ भलाई कर रहे हो बल्कि इसमें तुम्हारी ही भलाई है।

यहाँ एक अहम बात यह भी है कि कुछ लोग कहते हैं कि कमज़ोर और ग़रीब लोगों या किसी भी ज़रूरतमंद इंसान की मदद करना हुकूमत का काम है, यह हर आदमी की ज़िम्मेदारी नहीं है लेकिन खुदा कह रहा है कि यह तुम्हारी भी ज़िम्मेदारी है ''*ख़ैरन लि-अनफ़ुसिकुम*'' इसमें तुम्हारे ही लिए भलाई है। क्योंकि इंसान जिन चीज़ों से मोहब्बत करता है जब तक उन्हें खुद से नहीं ख़र्च करेगा तब तक उसके अंदर बहुत सी क्वालिटीज़ पैदा नहीं हो सकतीं। इसलिए ज़रूरी है कि वह खुदा के दिए हुए रिज़्क़ में से दूसरों को दे ताकि उसकी पर्सनॉलिटी में निखार आए।

मौत और क़यामत को याद करो

क़ुरआन खुदा की राह में ख़र्च न करने वालों को मौत का वक़्त और क़यामत का दिन याद दिलाते हुए कहता है, ''जो रिज़्क़ हम ने दिया है उसमें से हमारी राह में ख़र्च करो इससे पहले कि तुम में से किसी को मौत आ जाए और वह यह कहे कि खुदाया हमें थोड़े दिन की मोहलत क्यों नहीं दे देता कि हम ख़ैरात निकालें और नेक बंदों में शामिल हो जाएं।'' (3)

''ऐ ईमान वालो! जो तुम्हें रिज़्क़ दिया गया है उसमें से खुदा की राह में ख़र्च करो, इस से पहले कि वह दिन आ जाए जिस दिन न तिजारत होगी, न दोस्ती काम आएगी और न सिफ़ारिश।'' (4)

मौत के वक़्त और क़यामत के दिन हर आदमी के दिल में यह तमन्ना होगी कि काश हम वापस चले जाएं और नेक काम कर सकें लेकिन न तो उस वक़्त वापसी होगी और न ही वहाँ पर वह अपनी दौलत और अपनी कामयाबी से निजात ख़रीदी जा सकती है और न ही किसी दोस्ती के ज़रिए आगे बढ़ा जा सकता है। क्योंकि दुनिया में तो यह हो सकता है कि वह डिग्री ख़रीद ले या नौकरी ख़रीद ले या फिर दोस्ती और सोर्स से उनको पा ले लेकिन क़यामत में ऐसा नहीं हो सकेगा।

क्या ख़र्च करें?

''ऐ ईमान वालो! अपनी पाकीज़ा कमाई और जो कुछ हम ने ज़मीन से तुम्हारे लिए पैदा किया है सब में से ख़ुदा की राह में ख़र्च करो और ख़बरदार इन्फ़ाक़ के इरादे से ख़राब माल को हाथ भी न लगाना कि अगर वह माल ख़ुद तुमको दिया जाए तो आँख बंद किए बग़ैर छुओगे भी नहीं। याद रखो कि ख़ुदा सब से बेनियाज़ है और सज़ावारे हम्दो सना भी है।'' [5]

यह आयत कह रही है कि अगर तुम्हें ख़ुदा की राह में ख़र्च करना है तो अपनी पाकीज़ा कमाई में से ख़र्च करो। यह न समझो कि 'ब्लैक मनी' नेक काम में ख़र्च करने से 'व्हाइट' हो जाएगी क्योंकि हम नाजाएज़ कमाई से ख़र्च किया हुआ माल क़ुबूल ही नहीं करेंगे।

''तुम अपनी ख़ुशी से ख़र्च करो या मजबूरी और दबाव में, तुम्हारा अमल क़ुबूल नहीं किया जाएगा क्योंकि तुम फ़ासिक़ क़ौम (बहुत ज़्यादा और खुल्लम - खुल्ला गुनाह करने वाले) हो। [6]

कहाँ और कैसे ख़र्च करें?

इसका जवाब है: ''ख़ुदा की राह में ख़र्च करो।''

ख़ुदा की राह का मतलब, सिर्फ़ किसी भूखे का पेट भर देना या उन कामों में ख़र्च करना जिन्हें हम ख़ुदा का मज़हबी काम कहते हैं, नहीं हैं बल्कि हर वह रास्ता ख़ुदा का है जो इंसानों की किसी भी ज़रूरत (चाहे वह उनके जिस्म की ज़रूरत हो या उनकी रूह की, दोनों) को पूरा कर रहा हो। या यह कहा जाए कि उनकी दुनिया और आख़िरत दोनों की ज़रूरत को पूरा कर रहा हो।

किसी स्कालर ने अच्छी बात कही है कि ''मुर्दा क़ौमें सिर्फ़ मुर्दा चीज़ों पर ख़र्च करती हैं और ज़िंदा क़ौमें ज़िंदा चीज़ों पर।''

इन्फ़ाक़ के बाद की ज़िम्मेदारी

''ऐ ईमान वालो! अपने सदक़ों को एहसान जताकर और (जिसके साथ नेकी की है उसे) तकलीफ़ देकर बर्बाद न करो।'' [7]

कुछ लोग जज़्बात में आकर या किसी दूसरी वजह से इन्फ़ाक़ तो कर देते हैं लेकिन बाद में एहसान जताते हैं कि हम ने तुम्हारे ऊपर एहसान किया है या उस से काम लेकर उसे जिस्मानी या ज़हनी तकलीफ़ देते हैं। इसलिए क़ुरआन कह रहा है कि सिर्फ़ इन्फ़ाक़ कर देना ही काफ़ी नहीं है बल्कि इन्फ़ाक़ करने के बाद उसे बचाना भी ज़रूरी है।

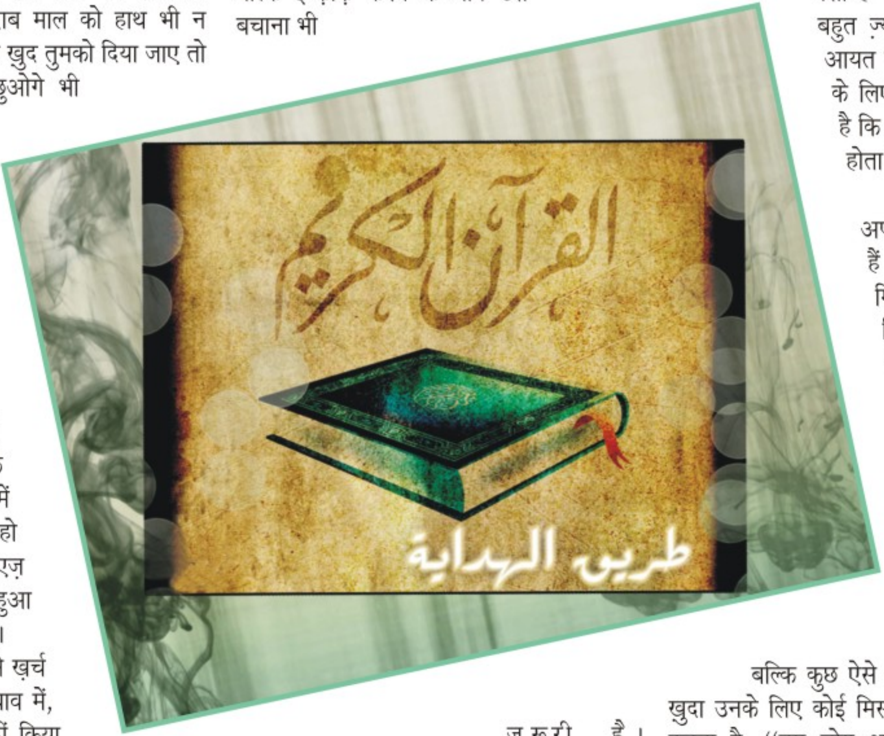

इसलिए इंसान को कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिस से उसकी मेहनत पर पानी फिर जाए और उसके नेक काम बर्बाद हो जाएं। अगर कोई यह शर्तें पूरी नहीं करता तो क़ुरआन उसके बारे में कह रहा है, ''अपनी ख़ैरात को एहसान जताकर और तकलीफ़ देकर उस आदमी की तरह बर्बाद न करो उस शख़्स की तरह जो अपने माल को दुनिया को दिखाने के लिए ख़र्च करता है और उसका ईमान न ख़ुदा पर है और न आख़िरत पर। उसकी मिसाल उस साफ़ चट्टान की है जिस पर गर्द जम गई हो कि तेज़ बारिश के आते ही बिल्कुल साफ़ हो जाए। यह लोग अपनी कमाई पर भी इख़्तियार नहीं रखते और अल्लाह काफ़िरों की हिदायत भी नहीं करता। [8]

इन्फ़ाक़ का नतीजा

अगर कोई इन्फ़ाक़ करने में इन सारी शर्तों का ख़याल रखता है तो इसका नतीजा यह होगा कि, ''जो लोग अपने माल को ख़ुदा की मर्ज़ी को हासिल करने और अपने नफ़्स को मज़बूत बनाने के लिए ख़र्च करते हैं उनके माल की मिसाल उस बाग़ की है जो किसी बुलंदी पर हो और तेज़ बारिश आकर उसकी फ़सल को दोगुना बना दे और अगर तेज़ बारिश न आए तो मामूली बारिश ही काफ़ी हो जाए और अल्लाह तुम्हारे आमाल की नियतों को अच्छी तरह जानता है।'' [9]

इस आयत में सिर्फ़ इतना कहा गया है कि इसकी मिसाल उस हरी भरी खेती जैसी है जो ऊँचाई पर हो और बहुत ज़्यादा फले फूले। दूसरी आयत में ख़ुदा ने हमें समझाने के लिए एक मिसाल और दी है कि इन्फ़ाक़ का नतीजा क्या होता है।

''जो लोग राहे ख़ुदा में अपने माल को ख़र्च करते हैं उनके अमल की मिसाल उस दाने की है जिससे सात बालियां पैदा हों और फिर हर बाली में सौ-सौ दाने हों और ख़ुदा जिसके लिए चाहता है इज़ाफ़ा भी कर देता है।'' [10]

लेकिन बात सिर्फ़ यहीं पर ख़त्म नहीं होती है बल्कि कुछ ऐसे इन्फ़ाक़ भी होते हैं कि ख़ुदा उनके लिए कोई मिसाल नहीं देता है बल्कि कहता है, ''तुम लोग अल्लाह और रसूल पर ईमान ले आओ और उस माल में से ख़र्च करो जिसमें उसने तुम्हें अपना नाएब बनाया है। तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ख़ुदा की राह में ख़र्च किया उनके लिए अज्रे अज़ीम है।'' [11]

इस आयत में ख़ुदा ने सिर्फ़ यह कहा है कि ख़ुदा इसका बदला बहुत बड़ा देगा: *''अज्रे कबीर''* यह कैसा होगा, नहीं मालूम लेकिन इतना ज़रूर है कि ख़ुद ख़ुदा जिसे बड़ा और अज़ीम कह रहा है हम उसके बारे में सोच भी नहीं सकते।

1-सूरए यासीन/47, 2-सूरए तग़ाबुन/16, 3-सूरए मुनाफ़िक़ून/10, 4-सूरए बक़रा/254, 5-सूरए बक़रा/267, 6-सूरए तौबा/53, 7-सूरए बक़रा/264, 8-सूरए बक़रा/264, 9-सूरए बक़रा/265, 10-सूरए बक़रा/261, 11-सूरए हदीद/7

13 मोहर्रम को शुहादाए करबला को दफ़्न करने के लिए बनी असद के साथ इमाम सज्जाद[अ0] जब करबला आए और अपने चचा जनाबे अब्बास[अ0] की लाश के पास पहुंचे तो खुद को लाश पर गिरा दिया और लाश के बोसे लेते हुए फ़रमाया, "ऐ क़मरे बनी हाशिम! आपके बाद हमारी दुनिया लुट गई।"

(मआली सिब्तैन, 2/4)

मेहदवियत

ज़ुहूर की निशानियाँ

जैसा कि हम इस से पहले के इशूज़ में लिख चुके हैं कि रसूल[स॰] के ज़माने से ही इमाम मेहदी[अ॰] की ग़ैबत और उनके ज़ुहूर का मसला सब लोगों के लिए बिल्कुल यक़ीनी था। यानी जब इमामे ज़माना[अ॰] इस दुनिया में आए भी नहीं थे तब भी लोग आते थे और रसूल[स॰] के सच्चे जानशीनों से उनके बारे में, उनकी ग़ैबत और उनके ज़ुहूर के बारे में तरह-तरह के सवाल करते थे और इस बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानने की कोशिश करते थे। उन लोगों के सामने इमामों ने जो चीज़ें बयान की हैं उनमें से एक इमामे ज़माना[अ॰] के ज़ुहूर की निशानियाँ हैं। अलग-अलग हदीसों में अलग-अलग तरह की निशानियाँ बताई गई हैं जो इमामे ज़माना[अ॰] के ज़ुहूर से पहले इस दुनिया में सामने आएंगी। इन निशानियों की वजह यह है कि इमामे ज़माना[अ॰] का ज़ुहूर दुनिया का एक बहुत बड़ा और अज़ीम वाक़िआ है जिसके सामने आने से पहले कुछ निशानियाँ आना चाहिएं जिनसे यह पता चले कि दुनिया में कोई बड़ा वाक़िआ होने वाला है जिस तरह रसूले अकरम[स॰] की पैदाइश के वक़्त दुनिया में कुछ निशानियाँ सामने आई थीं। इन निशानियों से दुनिया के बहुत से लोगों को मालूम हो गया था कि कोई ख़ास बात हुई है।

इन निशानियों के कुछ फ़ाएदे यह हैं:

1- इन निशानियों में से कुछ ख़ुद इतनी अज़ीम हैं जो ज़हूर करने वाले की अज़मत और बुलंदी को बयान करती हैं।

2- कुछ ऐसी निशानियाँ हैं जो दुश्मन के दिल में डर डालती हैं।

3- इन निशानियों की वजह से लोगों में हमेशा इंतेज़ार की हालत बाक़ी रहेगी और जब भी वह कोई निशानी देखेंगे तो उन्हें यक़ीन हो जाएगा कि हमारे दीनी रहनुमाओं ने जो कुछ कहा था वह सही कहा था और इमाम का ज़ुहूर बहरहाल होगा।

4- कुछ ऐसी निशानियाँ हैं जो इमाम का इंतेज़ार करने वालों को ख़ुशख़बरी देती हैं।

इन निशानियों के बारे में हमें ज़रूर जानना चाहिए ताकि झूठे लोग ''इमामे ज़माना'' होने का दावा करके सीधे-सादे लोगों को न बहका सकें।

ज़ुहूर की यह निशानियाँ दो तरह की हैं:

1- कुछ निशानियाँ ऐसी हैं जिनका होना बिल्कुल यक़ीनी है। जैसे ''सुफ़यानी'' नाम के नापाक इंसान का जंग करना, आसमान में अल्लाह की तरफ़ से और शैतान की तरफ़ से एक बहुत ऊँची आवाज़ का गूँजना, ख़ुदा के एक नेक बंदे, नफ़्से ज़किय्या का क़त्ल, सूरज का पश्चिम से निकलना और दुश्मन की छावनी में अंदुरूनी इख़्तेलाफ़।

2- कुछ निशानियाँ यक़ीनी नहीं हैं। उनका सामने आना ज़रूरी भी नहीं है और यह वक़्त और हालात की वजह से बदल सकती हैं।

इसके अलावा रिवायतों में कुछ चीज़ों को ज़ुहूर की निशानियाँ कहा गया है और कुछ चीज़ों को ज़ुहूर की शर्त। ज़ुहूर की निशानियों और शर्त में फ़र्क़ यह है कि:-

1- इमाम का ज़ुहूर इन निशानियों पर डिपेंड नहीं है। हो सकता है कि इनमें कुछ निशानियाँ सामने आएं और कुछ सामने न आएं और जो निशानियाँ पूरी होंगी वह भी हो सकता है कि ज़ुहूर से दसियों साल पहले सामने आएं और ज़ुहूर के वक़्त तक जारी रहें लेकिन जब तक ज़ुहूर की शर्त पूरी नहीं होगी उस वक़्त तक इमाम का ज़ुहूर नहीं होगा।

2- ज़ुहूर की निशानियों के बारे में हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। यह ख़ुदबख़ुद सामने आती

रहेंगी लेकिन ज़ुहूर की शर्त पूरी करना हमारी ज़िम्मेदारी है। (हम अगले इशू में ज़ुहूर की शर्तों के बारे में बात करेंगे।)

हम यहाँ पर ज़ुहूर की कुछ वह निशानियाँ पेश कर रहे हैं जिनके बारे में रिवायतों में कहा गया है कि वह यक़ीनी हैं और अगर ख़ुदा ने चाहा तो वह ज़रूर सामने आएंगी।

1- नफ़्से ज़किय्या का क़त्लः इमामे ज़माना[अ०] के ज़ुहूर से पहले अहलेबैत[अ०] की औलाद में से एक नेक किरदार इंसान का क़त्ल किया जाएगा। जिसके 15 दिन बाद इमाम ज़ुहूर करेंगे। इमाम सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, ''क़ायम के क़याम करने (इंक़ेलाब लाने) और नफ़्से ज़किय्या के क़त्ल होने में पंद्रह दिन से ज़्यादा दूरी नहीं है''।

2- शिया और अहलेसुन्नत, दोनों की रिवायतों में है कि **''सुफ़ियानी''** नामी शख़्स अपने लश्कर के साथ इमामे ज़माना[अ०] से मुक़ाबला करने के लिए आएगा लेकिन ख़ुदा के हुक्म से ''बैदा'' नाम के इलाक़े में अपने लश्कर समेत ज़मीन में धंस जाएगा।

3- सूरज ग्रहण और चाँद ग्रहणः ज़ुहूर की एक निशानी यह भी है कि सूरज ग्रहण माहे रमज़ान के बीच में होगा और चांद ग्रहण माहे रमज़ान के शुरु में। जबकि सूरज ग्रहण महीने के शुरु में होता है और चाँद ग्रहण महीने के आख़िर में।

4- आसमान से एक आवाज़ का आना जिसे पूरी दुनिया के लोग सुनेंगे और समझेंगे। यह आवाज़ रमज़ान के महीने में आएगी।

जिस तरह किसी बड़े प्रोग्राम से पहले एलान होता है ताकि लोगों को प्रोग्राम के बारे में बताया जा सके उसी तरह यह आवाज़ उस अज़ीम शख़सियत के ऐसे इंक़ेलाब का पूरी दुनिया में एलान करेगी जो पूरी दुनिया के लिए होगा और पूरी दुनिया में बदलाव लाएगा।

5- दज्जालः बहुत सी रिवायतों में कहा गया है कि ज़ुहूर से पहले दज्जाल आएगा जिसकी एक आँख होगी और जिसके पास ऐसी बहुत सी चीज़ें होंगी जिनसे लोग उसकी तरफ़ खिंचते चले जाएंगे।

दज्जाल के मायने झूटे और गुमराह करने वाले के हैं।

दज्जाल के बारे में ज़्यादातर रिवायतें अहलेसुन्नत की हदीस की किताबों में हैं।

बहुत से उलमा का मानना है कि दज्जाल का आना सच है लेकिन इसके बारे में बहुत सी ग़लत रिवायतें गढ़ दी गई हैं। उनमें से बहुत सी रिवायतें एक यहूदी की हैं जिसका नाम काबुल अहबार था और जिसने बहुत सी रिवायतें गढ़ कर मुसलमानों के बीच फैला दी थीं। यह बात भी बिल्कुल ग़लत है कि दज्जाल रसूल[स०] के ज़माने में भी मौजूद था।

इसीलिए उलमा का मानना है कि अगर दज्जाल के बारे में मौजूद रिवायतों को मान भी लिया जाए तब भी दज्जाल सिर्फ़ एक सिम्बल है। जैसा कि सैय्यद मोहम्मद सद्र कहते हैं, ''दज्जाल एक कोड है। इस से मुराद वेर्स्टन कल्चर है जो इस्लाम और उसकी टीचिंग्स के ख़िलाफ़ है। यह कल्चर हर इंसान पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रहा है। हम इस वक़्त साफ़-साफ़ देख रहे हैं कि आज वेस्टर्न कल्चर ने किस तरह से सारी दुनिया पर यहाँ तक कि मुसलमानों पर भी कंट्रोल कर लिया है।'' इसी कल्चर के पास वह बहुत सी चीज़ें हैं जिससे वह लोगों को अपनी तरफ़ खींच रहा है और जैसा कि दज्जाल का मतलब ''झूठा और गुमराह करने वाला'' है यह कल्चर लोगों को अपने झूट, मक्कारी और फ़रेब से गुमराह कर रहा है।

लेकिन इन निशानियों के साथ-साथ हमें यह भी जानना चाहिए कि इमामे ज़माना[अ०] का ज़ुहूर ख़ुदा के इरादे पर है यानी जब ख़ुदा चाहेगा तभी ऐसा होगा। ऐसा नहीं है कि अगर यह निशानियाँ सामने आ जाएं तो फ़ौरन इमामे ज़माना[अ०] का ज़ुहूर हो जाएगा बल्कि इन सब में जो चीज़ बिल्कुल यक़ीनी है और उसमें कोई तबदीली नहीं हो सकती वह इमामे ज़माना[अ०] का ज़ुहूर है। जैसा कि इस रिवायत में बयान किया गया है, ''दाऊद बिन अबुल क़ासिम कहते हैं कि मैं इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] के पास था। वहाँ पर ज़ुहूर की निशानियों और सुफ़यानी नामी आदमी के जंग करने की बात होने लगी। मैंने इमाम से पूछा, ''क्या ख़ुदा यक़ीनी चीज़ों के बारे में भी अपना फ़ैसला बदलता है?'' इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''हाँ! हर तरह की तबदीली अल्लाह के हाथ में है। (यानी वह इन यक़ीनी निशानियों में भी कोई तबदीली कर सकता है)।'' मैंने कहा, ''इस तरह तो हमें डर है कि कहीं इमामे ज़माना[अ०] के ज़ुहूर के बारे में भी अपना फ़ैसला न बदल दे।'' इमाम[अ०] ने कहा, ''नहीं! ऐसा कभी नहीं हो सकता क्योंकि हज़रत क़ाएम[अ०] का क़याम अल्लाह के न बदलने वाले वादों में से है।[1]

इसलिए ज़ुहूर की इन निशानियों को अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है क्योंकि हम कभी-कभी कुछ निशानियों को ग़लत समझ लेते हैं और फिर यह सवाल करते हैं कि यह निशानी तो सामने आ गई है फिर इमाम का ज़ुहूर क्यों नहीं हो रहा है। जैसे रिवायतों में है कि इमाम के ज़ुहूर से पहले पूरी दुनिया ज़ुल्म और नाइंसाफ़ी से भर जाएगी जिसे इमाम अद्ल व इंसाफ़ से भर देंगे। जब कुछ लोग दुनिया में बहुत सी जगहों पर ज़ुल्म होते हुए देखते हैं तो पूछते हैं कि इतना ज़ुल्म तो हो रहा है फिर इमाम का ज़ुहूर क्यों नहीं हो रहा है?

लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि:

1- रिवायत में यह नहीं कहा गया है कि दुनिया का ज़ुल्म व सितम से भर जाना इमाम के ज़ुहूर की वजह है बल्कि इस से मुराद वह हालात हैं जिनमें इमाम को ज़ुहूर करना है। जैसे अगर यह कहा जाए कि जब मौसम अच्छा होगा तब मेहमान आएंगे। इसका मतलब यह है कि मेहमान जब भी आएंगे ऐसे ही मौसम में आएंगे और ख़राब मौसम में नहीं आएंगे। इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि जब-जब मौसम अच्छा होगा तब मेहमान भी आएंगे।

2- ज़मीन पर ज़ुल्मो सितम का होना एक Comparative चीज़ है। हर ज़माने में पिछले ज़माने से ज़्यादा ज़ुल्म होता रहा है। इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि यह ज़ुल्म की आख़री हद है बल्कि इमाम के ज़ुहूर के वक़्त दुनिया में इस से ज़्यादा ज़ुल्म हो रहा होगा।

3- रिवायतों में सिर्फ़ यही नहीं कहा गया है कि जब दुनिया में ज़ुल्म फैल जाएगा तब इमाम ज़ुहूर करेंगे बल्कि इसके साथ-साथ दूसरी बहुत सी शर्तें भी हैं। जिनमें से एक शर्त यह है कि ऐसे लोग तैयार हों जो पूरी तरह से दीन के पाबंद होंगे और इमाम का साथ दे सकेंगे और इमाम की हर बात मानेंगे। कुछ रिवायतों में इन लोगों की तादाद 10 हज़ार बताई गई है।

दुनिया में ज़ुल्म व सितम फैल जाने की इसी रिवायत को देखकर कुछ लोग यह समझते हैं कि जब पूरी दुनिया ज़ुल्मो सितम से भर जाएगी तो कोई भी नेक और अच्छा इंसान नहीं बचेगा?

जबकि रिवायतों में यह है कि पूरी दुनिया ज़ुल्म से भर जाएगी, न कि ज़ालिमों से। इन दोनों में फ़र्क़ है। जैसे अगर कहा जाए कि पूरे कमरे में सिग्रेट का धुआँ भरा है तो इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं होगा कि कमरे में जितने लोग हैं सब सिग्रेट पी रहे हैं बल्कि अगर कमरे में 10 लोग हैं और उनमें से सिर्फ़ 4 लोग भी सिग्रेट पी रहे हैं तो कमरे में धुआँ भर जाएगा। इसलिए ज़मीन में ज़ुल्म फैलने का मतलब यह नहीं है कि सारे लोग ज़ालिम हो जाएंगे बल्कि अगर कुछ लोग ज़ालिम हों और वह पूरी दुनिया का कंट्रोल अपने हाथ में लिए हुए हों तब भी कहा जाएगा कि दुनिया में ज़ुल्म व सितम फैला हुआ है जिसके मुक़ाबले में बहुत से नेक लोग भी मौजूद होंगे।

इसलिए इस रिवायत का मतलब बिल्कुल यह नहीं है कि दुनिया में कोई भी नेक इंसान नहीं बचेगा। ऐसा नहीं है बल्कि नेक लोग इतने होंगे कि इमाम उनके ज़रिए अपने मिशन की शुरुआत कर सकेंगे और इस पूरी दुनिया पर ख़ुदा के दीन को फैला सकेंगे। जब भी यह लोग तैयार हो गए इमाम ख़ुदा के हुक्म से ज़ुहूर फ़रमाएंगे।

1-बिहारुल अनवार, 52/250-251

शराब

■ अनम रिज़वी

नशा हमारी सोसाइटी पर एक कलंक है और यह हराम भी है। नशे में कई चीज़ें आती हैं- शराब, ड्रग्स, भाँग वग़ैरा। कुछ लोग शराब को ग़लत नहीं समझते। कुछ जगह तो पहुँचते ही शराब पेश की जाती है जिससे पता चलता है कि यह हाइ स्टेटस सोसाइटी वाले हैं। अफ़सोस की बात यह है कि कुछ मुस्लिम भी इसे ग़लत नहीं समझते और ख़ुद को सोशल-ड्रिंकर बताते हैं मतलब कम पीने वाले...मगर शराब का एक घूँट भी हराम है। एक सोशल-ड्रिंकर कब शराब का आदी बन जाएगा उसे पता भी नहीं चलेगा। शराबी की कहीं इज़्ज़त नहीं है क्योंकि नशे में इंसान कोई भी ग़लत काम कर सकता है। ख़ुदा ने शराबी को बुरा कहा है और सिर्फ़ शराबी को ही नहीं बल्कि शराब का करोबार करने वाले को भी। ऐसे इंसान का पैसा भी हराम है क्योंकि उसने यह पैसा हराम कमाई से कमाया है। शराब का कारोबार करने वाले के घर में खाना खाना भी हराम है क्योंकि वह खाना हराम पैसों से बना है। शराबी की ज़िंदगी ज़िल्लत भरी होती है।

शराब से होने वाली कुछ बीमारियों के नामः-

1- जिगर का रोग, यह शराब पीने वालों में होने वाली आम बीमारी है।

2- सिर, गर्दन, जिगर और आँतों का कैंसर।

3- Oesophagitis, Gastritis, Pancreatitis, Hepatitis *यह बीमारियाँ शराब पीने से पैदा होती हैं।*

4- शराब पीने से जिस्म में Thiamine *की कमी हो जाती है जिससे* Wernicke-Korsakoff *बीमारी पैदा हो जाती है।*

5- शराबी के हार्ट-अटैक के चांसेज़ बढ़ जाते हैं।

6- बड़ी-बड़ी बीमारियां और कई तरह की कमियाँ शराबियों में पाई जाती हैं। यहाँ तक कि Pellagra *शराब पीने वालों में पैदा होता है।*

7- Thrombocytopenia *और* Platelet *से जुड़ी शिकायतें शराब की देन हैं।*

8- शराबियों के अंदर बार-बार इन्फ़ेक्शन होना आम बात है जैसे Chest Infection *।*

9- एक्ज़िमा, नाख़ुन के आस-पास इन्फ़ेक्शन और मुँह का सूजना भी शराब पीने वालों में आम सी बात है।

10- नशे में धुत होने के बाद शराब पीने वाला कभी-कभी उल्टी करता है। जिसकी वजह से Cough-Reflexes *जो ज़रूरी होते हैं उनको नुक़सान पहुँचता है। इस तरह उल्टी फेफड़े में चली जाती है और वह निमोनिया की वजह बनती है। कई बार इसकी वजह से घुटन पैदा हो जाती है जिससे आदमी मर जाता है।*

शराब पीना एक आदत नहीं बल्कि ख़ुद एक बीमारी है।

शराब वह बीमारी है जो बोतल में बिकती है।

इसको फैलाने वाली लाइसेंस पाई दुकानें हैं। हुकूमत को इस से आमदनी होती है।

बीच सड़क पर इसकी वजह से दर्दनाक मौतें होती हैं।

शराब ज़िंदगी को तबाह व बर्बाद कर डालती है और जुर्म को बढ़ाती है।

औरतें जॉब, इस्लाम

■ आयतुल्लाह ख़ामेनई

इस्लाम ख़्वातीन के नौकरी और जॉब करने के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि उनकी नौकरी और जॉब को उस हद तक शायद ज़रूरी भी समझता है जहां तक यह उनकी बुनियादी और सबसे ख़ास ज़िम्मेदारी यानी औलाद की तरबियत और फ़मिली की हिफ़ाज़त से न टकराएं। कोई भी मुल्क अपनी तरक़्क़ी के लिए ज़िन्दगी के अलग-अलग मैदानों में ख़्वातीन की सलाहियतों और ताक़त से बचके तरक़्क़ी नहीं कर सकता। लेकिन शर्त ये है कि ये काम और जॉब, औरत की रूहानी और इन्सानी पाकीज़गी और अज़्मत से न टकराएं, मर्द उसको ज़लील न करें, उसकी तौहीन न करें और उसे अपने सामने झुकने पर मजबूर न करें।

घमण्ड यूं तो हर इन्सान के लिए एक बहुत बुरी सिफ़त है लेकिन यही इतनी बुरी सिफ़त ग़ैर मर्दों के सामने औरतों के लिए एक बहुत अच्छी सिफ़त है। औरत को नामेहरम मर्द के सामने गुरूर और तकब्बुर से पेश आना चाहिए और नर्म और मुलायम लहजे में बिल्कुल बात नहीं करना चाहिए क्योंकि ये औरत की पाकीज़गी की हिफ़ाज़त के लिए बहुत ज़रूरी है। इस्लाम ने नामेहरम मर्दों के सामने औरत के लिए इसी गुरूर को पसन्द किया है और ये एक मुसलमान औरत के लिए मिसाली नमूना है।

औरतों को हमारा पैग़ाम

यही वह जगह है जहाँ हम पश्चिमी दुनिया के बिल्कुल सामने खड़े हैं। मैंने अलग-अलग मौक़ों पर ज़ाकेरीन और ख़तीबों के सामने बार-बार कहा है कि हमें औरतों और दूसरे समाजी इश्यूज़ पर अपना डिफ़ैंस करने की कोई ज़रूरत नहीं है बल्कि इसके बजाए यह तो पश्चिमी दुनिया की ज़िम्मेदारी है कि वह अपने गन्दे और गुमराह कल्चर का डिफ़ैंस करे। हम औरतों के बारे में जो कुछ भी कहते हैं हक़ीक़त में उसका इन्कार कोई भी इन्साफ़ पसन्द और अक़्लमन्द इन्सान नहीं कर सकता क्योंकि यही एक औरत के लिए बेहतरीन ज़िन्दगी है।

हम औरतों को पाकीज़गी, शराफ़त, हिजाब, मर्द-औरत के बीच हर तरह के खुले मेल-जोल से दूरी और अपनी इन्सानियत की हिफ़ाज़त और नामेहरम मर्द के सामने मेकअप और सजकर न आने की दावत देते हैं ताकि मर्द, औरतों से जिस्मानी और ज़ेहनी फ़ाएदा न उठा सकें।

क्या ये बातें बुरी हैं?! बिल्कुल नहीं, बल्कि एक मुसलमान औरत समेत सारी औरतों के लिए यही बातें शराफ़त और पाकीज़गी की पहचान हैं।

अगर लोग ख़्वातीन को इस बात पर उभारते हैं और उनकी हिम्मत बंधाते हैं कि वह सज-सवंर कर और मेकअप के साथ गली-कूचों में इस शान से निकलें कि मर्द उन पर ग़लत निगाह डालें और अपनी सेक्चुअल डिज़ायर्स को इस हराम रास्ते से पूरा करें तो हम ये कहते हैं कि उन औरतों को चाहिए कि अपना बचाव करें ताकि मर्द, औरत को किसी भी तरह ज़लील न कर सके। ऐसे लोगों को करारा जवाब देना चाहिए। हमारा इस्लामी कल्चर, ऐसा कल्चर है जिसे पश्चिमी दुनिया के समझदार लोग पसन्द करते हैं और वह भी वहां अपने किरदार को ऐसे ही बचाकर रखते हैं। वहां ऐसी संजीदा औरतें भी हैं जो अपनी अज़्मत और पाकीज़गी को समझती हैं और इस बात के लिए बिल्कुल तैय्यार नहीं होतीं कि ख़ुद को अजनबी और ग़ैर मर्दों की सेक्चुअल डिज़ायर्स को पूरा करने का ज़रिया बनने दें। पश्चिमी दुनिया के गंदे व गुमराह कल्चर में ऐसी मिसालें भरी पड़ी हैं।

मैं करबला में खड़ा हूँ

मैं करबला में खड़ा हूँ
लिबासे सोग में हूँ
है अरबईन, हुसैन[अ०] और हुसैनी लश्कर का
करोड़ों लोग हैं
सारे लिबासे सोग में हैं
हर एक नस्ल, हर एक रंग, हर ज़बान के लोग
निगाहें रौज़ए शब्बीर के तवाफ़ में हैं
लबों पे हाए हुसैना! ग़रीब हाए हुसैन!
ख़याल आता है 61वीं सन्ने हिजरी का
और उस मोहर्रम का।
यही मुक़ाम था
यही मुक़ाम था एक बंदा-ए-ख़ुदा जिसका
हुसैन[अ०] नाम था
हुसैन[अ०] नाम था जिसका
रहे ख़ुदा में हथेली पे सर उठाए हुए
हर एक दौर के इन्साँ की आबरू के लिए
वह अपने दिल पे 72 के ज़ख़्म उठाता रहा
वह अपने जिस्म पे ज़ख़्मों पे ज़ख़्म खाता रहा
क़दम बढ़ाता रहा, क़दम बढ़ाता रहा।
बस एक अज़्म था, इंसान सुर्ख़-रू हो जाए
बस एक धुन थी कि इन्सानियत न मर जाए।
हर दिल में या हुसैन[अ०]! हर एक दिल में करबला
बेदार कर दिया जो ज़माना हुसैन[अ०] ने
बे-साख़्ता तमाम ज़माना यह कह उठा
...कि हमारे हैं हुसैन[अ०]
इन्सानियत की शान बढ़ाई हुसैन[अ०] ने
इन्सानियत बशर को सिखाई हुसैन[अ०] ने

इन्सानियत की प्यास बुझाई हुसैन[अ०] ने
इन्सान जब हुसैन[अ०] के पैकर में ढल गया
इन्सानियत पुकारी, व-तुइज़्ज़ु मन त-शा
...कि हमारे हैं या हुसैन[अ०]
दुनिया के हर अदब में है हिस्सा हुसैन[अ०] का
दुनिया की हर ज़ुबाँ पे है क़ब्ज़ा हुसैन[अ०] का
इन्साँ समझ रहा है यह रुतबा हुसैन[अ०] का।
तारीख़ को हुसैन[अ०] ने हैरान कर दिया
सारे जहाँ के अहले क़लम ने यह लिख दिया
...कि हमारे हैं या हुसैन[अ०]
सूरे में मे-अ-तैन के अल्लाह ने सुनाया
तख़लीक़े कुल में इन्साँ, अशरफ़ तुझे बनाया
इन्साँ का दर्द दिल में इंसान के उतारा
इन्सानियत का मकतब, घर पंजतन[अ०] का रखा
उस घर में पंजतन[अ०] के एक शहर को बसाया
फिर अपना ख़ून दे के उस शहर को संवारा
यह शहरे नेनवा है, यह शहरे मारिया है, यह शहरे करबला है।
दिल है तो करबला, दिल है तो या हुसैन[अ०]
इन्सानियत समझने चलो करबला चलो
हाँ! थाम लो हुसैन[अ०] के दामन को थाम लो!
हुर, जौन और हबीब की सफ़ में खड़े रहो!
दिल है तो अब हुसैन[अ०] की आवाज़ को सुनो!
फ़रमाते थे हुसैन[अ०], वह इन्सान नहीं है
लूटे जो दिल का चैन, वह इन्सान नहीं है
रोएं न जिसके नैन, वह इन्सान नहीं है
हंस दे जो सुन के बैन, वह इन्सान नहीं है
इन्सानियत बचाए, वह इन्सान है इन्साँ
इन्साँ का दुख उठाए, वह इन्सान है इन्साँ
दर्से वफ़ा सिखाए वह इंसान है इंसाँ
जो सब पे रहम खाए, इल्मो अमल बढ़ाए
इन्सानियत बचाए वह इन्सान है इंसाँ
इन्सान को हुसैन[अ०] ने इन्साँ बना दिया।
इन्सानियत के लब पे मुसलसल थी यह सदा
...कि हमारे हैं या हुसैन[अ०]।।

शेरदिल बेटी का दरबारे यज़ीद में ख़ुतबा

ये है वह अज़ीमुश्शान और तारीख़ी ख़ुतबा जो शेरे ख़ुदा की शेरदिल बेटी ने यज़ीद के खचाखच भरे हुए दरबार में पूरी दिलेरी और बहादरी से दिया था और इस ख़ुतबे से यज़ीद के गुरूर को मिट्टी में मिला दिया था और इस तरह मिट्टी में मिलाया था कि फिर दोबारा यज़ीद मिट्टी से अपना सर न उठा सका.....

सब तारीफ़ें उसके लिए हैं जो सारी दुनिया का पालने वाला है और दुरूद व सलाम हो रसूल और उनके अहलेबैत पर....!

कितनी सच्चाई है ख़ुदावंदे आलम के इस इरशाद में कि, '*आख़िरकार जिन लोगों ने बुराईयाँ की थीं उनका अंजाम भी बहुत बुरा हुआ क्योंकि उन्होंने अल्लाह की निशानियों को झुठलाया था और वह उनकी हंसी उड़ाते थे।*

क्यों? यज़ीद! ज़मीन व आसमान के सारे रास्ते हम पर बंद करके और ख़ानदाने नुबुव्वत को आम क़ैदियों की तरह दर-बदर फिराकर तूने ये समझ लिया कि ख़ुदा की बारगाह में हमारा जो मुक़ाम था उसमें कोई कमी आ गई और तू खुद बड़ा इज़्ज़तदार बन गया? या फिर तू इस ग़लत फ़हमी का शिकार है कि वह वाक़ेआ जिस से हमें तेरे हाथों दोचार होना पड़ा उस से तेरी इज़्ज़त बढ़ गई और शायद इसी ग़लत फ़हमी की वजह से तेरी नाक और चढ़ गई और गुरूर के मारे तू अपने कंधे उचकाने लगा?

हाँ! ये सोच कि तू खुशी से फूले नहीं समा रहा है कि तेरी ज़बरदस्ती की हुकूमत की हदें बहुत फैल चुकी हैं और तेरी सलतनत की नौकर शाही बड़ी मज़बूत हो गई है।

और हो सकता है कि तू ये भी समझ बैठा हो कि दुनिया को पैदा करने वाले ने हमारी हुकूमत में तुझे बिना किसी ख़तरे के फैल-फैलकर इत्मिनान से अपना हुक्म चलाने और मनमानी करने का ये मौक़ा दिया है...!

ठहर, यज़ीद ठहर! एक दो सांसें और ले ले। फिर देखना, क्या होता है? असल में तू ख़ुदा के उस फ़ैसले को भुला बैठा है कि '*कुफ़्र का रास्ता चुनने वाले ये गुमान न करें कि हम जो उन्हें छूट दिए जाते हैं वह उनके हक़ में कोई अच्छाई है, हम तो उन्हें इसलिए ढील दे रहे हैं कि ये ख़ूब जी भर कर गुनाह समेट लें। इसके बाद उनके लिए सख़्त ज़िल्लत वाली सज़ा और रुसवा करने वाला अज़ाब है।*'

ऐ हमारे आज़ाद किये हुओं के बेटे! क्या यही इंसाफ़ है? इसी को इंसाफ़ कहते हैं कि तेरी औरतें और कनीज़ें तक तो पर्दे में हों और नबी की बेटियों की चादरें छीन कर उन्हें बेपर्दा, नंगे सर एक शहर से दूसरे शहर फिराया जाए?

हाँ, यज़ीद! तूने ही हमें इन हालात तक पहुँचाया है। हम बे वारिसों का क़ाफ़िला जिस जगह पहुँचता है वहाँ तमाशा देखने वालों की भीड़ लग जाती है। हर तरह के लोग, हर तरह के आदमी, राह-राह, मंज़िल-मंज़िल, भीड़ की भीड़। दूर और पास से हमें देखने के लिए जमा हो जाती है! इस कारवां का न कोई साथी है न हिमायती, न दोस्त न निगेहबान...! हाँ! मगर जिसका ताल्लुक़ हमारे बुज़ुर्गों का कलेजा चबाने वालों से हो उससे किसी रिआयत की क्या उम्मीद हो सकती है? और जिसका गोश्त-पोस्त हमारे शहीदों के ख़ून से बना हो, भला उसके दिल में हमारे लिए कोई नर्मी कहाँ पैदा हो सकती है?

हाँ! हाँ! जो रसूल के अहलेबैत की दुश्मनी में अंगारों पर लोट रहा हो उस से कब ये उम्मीद बाँधी जा सकती है कि वह हक़ीक़तों के बारे में कभी ठंडे दिल से ग़ौर भी करेगा?

ऐ यज़ीद! तू जुर्म के एहसास के बग़ैर किस ढटाई से कहता जा रहा है कि 'अगर इस वक़्त मेरे दादा-परदादा मुझे देखते तो कितने ख़ुश होते! वह मुझे शाबाशी देते और कहते कि यज़ीद तेरे बाज़ुओं को नज़र न लगे! तूने मुहम्मद के घराने से कितना अच्छा बदला लिया है!'

यज़ीद....! तू जो कुछ कर रहा है और जो कुछ कहता जा रहा है...वह तेरे दिल की हालत को बयान कर रहा है! ज़रा देख तो सही, बेअदब!

अपनी छड़ी से जिस हस्ती के मुक़द्दस होंटों के साथ तू गुस्ताख़ी कर रहा है, वह जन्नत के जवानों का सरदार है!

तूने मुहम्मद[स॰] के प्यारों का ख़ून बहाकर और अब्दुल मुत्तलिब के चाँद-तारों को ख़ाक में मिलाकर अपने सूखे हुए ज़ख़्मों को फिर से हरा और भरे हुए घाव को कुछ और गहरा कर दिया है! और उस पर से तू अपने पुरखों को भी पुकार रहा है, अपने गड़े हुए मुर्दों को आवाज़ दे रहा है और इस से बेख़बर कि जल्दी ही तू ख़ुद भी उसी घाट उतरने वाला है जहाँ वह हैं, और जब तू अपने सगों के पास पहुँच जाएगा तो फिर रह-रह कर तेरा दिल चाहेगा कि काश! न ज़बान में ताक़त होती और न हाथों को हरकत! ताकि जो कुछ कहा है वह न कहता और जो किया है वह न करता!

परवरदिगार! तू इन ज़ालिमों से हमारा हक़ दिला दे और इन ज़ुल्म करने वालों से हमारे बदले चुका दे। ऐ ख़ुदा! जिन ज़ालिमों ने हमारा ख़ून बहाया है और हमार साथ देने वालों को क़त्ल किया है, उन पर अपना अज़ाब नाज़िल फ़रमा।

ख़ुदा की क़सम! ऐ यज़ीद! तूने ख़ुद ही अपनी खाल नोची है और अपने हाथों अपने गोश्त के टुकड़े किए हैं!

बहुत जल्दी वह वक़्त आने वाला है कि तुझे बड़ी ज़िल्लत व बेइज़्ज़ती की हालत में अल्लाह के रसूल[स॰] का सामना करना पड़ेगा। तूने नबी की औलाद को ख़ाक व ख़ून में डुबो दिया है और उनके घर वालों, उनके प्यारों को ज़ुल्म का निशाना बनाकर उनकी हुरमत को पामाल किया है।

यज़ीद! जब तू अपने इन बड़े-बड़े जुर्मों का बोझ उठाए क़यामत के दिन ख़ुदा की अदालत में पेश होगा तो फिर देखना कि महशर का ख़ुदा किस तरह रिसालत के बिखरे हुए फूलों को इकटठा करके फूल की हर पत्ती को बहारों का ठिकाना बनाता है और वह हक़ीक़ी इंसाफ करने वाला किस तरह ज़ुल्म व ज़बरदस्ती करने वाले बाग़ियों से हमको हमारा हक़ दिलाता है! उस पैदा करने वाले का इरशाद है, ''जो लोग अल्लाह के रास्ते में क़त्ल होते हैं उन्हें मुर्दा न समझो, वह तो हक़ीक़त में ज़िंदा हैं, अपने रब के पास से रोज़ी पा रहे हैं।''

सुन यज़ीद...! तेरे लिए तो बस इतना ही काफ़ी है कि बहुत जल्द ख़ुदा फ़ैसला देगा। मुहम्मदे मुस्तफ़ा[स॰] दावा करने वाले होंगे और जिब्रईले अमीन मदद करेंगे।

हाँ! वह लोग भी इसी हंगामें में अपना अंजाम देख लेंगे जिन्होंने रास्ता साफ़ करके तुझे इस जगह तक पहुँचाया और फिर अल्लाह व रसूल[स॰] का कलमा पढ़ने वालों की गर्दनों पर बिठा दिया।

जब हिसाब व किताब का वक़्त आएगा तब ही पता चलेगा कि जो ज़्यादतियाँ करते हैं उनको कितनी बुरी सज़ा मिलती है!

और उसी वक़्त ये भी साफ़ हो जाएगा कि किसे बुरी जगह दी गई और किसके साथी किस दरजे के डरपोक निकले।

ऐ यज़ीद! ये तो ज़माने का इंक़ेलाब है कि मुझे तुझ जैसे आदमी से बात करने पर मजबूर होना पड़ा! तुझे तो मैं बहुत छोटा और बेऔक़ात समझती हूँ। हाँ! तेरी बुराई को बड़ा काम और तेरी तौहीन को एक अच्छी बात मानती हूँ!

तुझ से बात करने की वजह सिर्फ़ ये है कि आँखों में आँसू उमंड रहे हैं और कलेजे से आँचें निकल रही हैं!

कितनी हैरत की बात है कि वह अल्लाह वाले जिन्हें उसने इज़्ज़त व बुज़ुर्गी देकर सरफ़राज़ फ़रमाया, वही मक्का की फ़तह के दिन हमारे आज़ाद किए हुए शैतान सिफ़त गिरोह के हाथों बर्बाद हों। आह! आह! दुश्मन की आस्तीन से अभी तक हमारे शहीदों का ख़ून टपक रहा है और आज भी उनके होंट और दाँतों पर हमारा गोश्त चबाने के निशान मौजूद हैं.... उफ़! उन पाक हस्तियों और पाकीज़ा लोगों के जिस्म रेगिस्तान में बिना कफ़न और बिना क़ब्र के पड़े हुए हैं।

ऐ यज़ीद! अगर आज हमें जंगी क़ैदी बनाकर तू समझ रहा है कि कुछ हासिल कर लिया, तो याद रख कि इसके मुक़ाबले में सख़्त नुक़सान उठाना पड़ेगा।

और ये बात न भूलना...कि तू अपने आमाल की सूरत में जो भेजेगा बस वही पाएगा और काएनात का पालने वाला अपने बंदों पर कभी ज़ुल्म नहीं करता। हम अल्लाह के सिवा न किसी से अपना हाल कहते हैं और न किसी के पास फ़रियाद ले जाते हैं! सिर्फ़ उसी की ज़ात पर हमारा भरोसा है और वही हम सबका मरकज़े एतेमाद है। ऐ यज़ीद! तेरे पास धोखे का जितना ज़ख़ीरा है उसे जी खोलकर काम में ले आ! हर तरह की कोशिश में भी कोई कमी न उठा रखना! अपनी सियासी कोशिशों को और तेज़ कर दे और हाँ! सारी हसरतें निकाल ले! तमाम आरज़ुएं पूरी कर ले...!

मगर इसके बाद भी तू, न तो हमारी शोहरत को कम कर सकता है और न ही तेरी ये औक़ात है कि हमें जो मक़बूलियत हासिल है उस पर असर डाल सके। फिर ये भी तेरे बस में नहीं कि हमारी फ़िक्र और हमारे पैग़ाम को फैलने से रोक दे! साथ ही तू हमारे मक़सद की गहराई तक पहुँचने और उसको समझने के लाएक़ भी नहीं।

यज़ीद! तेरी सोच ग़लत है, तेरी राय ग़लत है! तेरी ज़िंदगी के सिर्फ़ कुछ दिन बाक़ी रह गए हैं। तेरी बिसात उलटने वाली है और बहुत जल्द तेरे साथी तितर-बितर हो जाएंगे। इसके अलावा वह दिन भी क़रीब है जब मुनादी आवाज़ देगा, ग़ैबी आवाज़ देने वाला कहेगा कि 'ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत'। और सब तारीफ़ें और शुक्र अल्लाह के लिए जो तमाम जहानों का परवरदिगार है। वह रब्बुल अरबाब जिसने हमारे बुज़ुर्गों को अच्छे अंजाम तक पहुँचाया और इज़्ज़त दी और हमारी आख़िरी शख़सियतों को शहादत व रहमत की बड़ी नेमत अता फ़रमाई।

रहम करने वाला हमारे शहीदों के सवाब को कमाल तक पहुँचाए! उनके सवाब को बढ़ा दे और उनके वारिसों और जानशीनों को अपनी मेहरबानी से अता फ़रामाए!

यक़ीनन वह बड़ा रहम करने वाला और मेहरबान है। ●

खाने के उसूल

क्या खाएं?
कैसे खाएं?
कितना खाएं?

■ डॉ. पैकर जाफ़री

मेडिकल एक्सपर्टस का कहना है कि सेहत व तंदुरुस्ती बाक़ी रखने के लिए सेहत के उसूलों का जानना ज़रूरी है। अगर इंसान ज़िंदगी के सही उसूल अपना ले तो ज़िंदगी के हर हिस्से में सुकून हासिल कर सकता है। इसलिए सबसे पहले सेहत को अच्छी तरह बाक़ी रखने के लिए ग़िज़ा पर पूरा ध्यान देना पड़ेगा। इसके लिए रूह व जिस्म के तबीब हज़रत अली[अ०] का इरशाद ध्यान में रखना होगाः

(1) अगर भूख न लगे खाना मत खाओ।

(2) कुछ खाने की ख़्वाहिश बाक़ी रहने पर खाना छोड़ दो।

(3) खाना ख़ूब चबाकर खाओ।

(4) सोते वक़्त रफ़-ए-हाजत करके सोओ।

इसी तरह रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद[स०] ने भी फ़रमाया है कि, तेज़ गर्म मत खाओ।

खाना खाते वक़्त ज़हन खुश और मुतमइन हो, पुरसुकून माहौल हो। ग़म, अफ़सोस, सदमा और गुस्सा इस तरह के जज़्बात की हालत में खाना खाने से हाज़मा ख़राब हो जाता है।

खाना खाने के दौरान पानी न पिएं, खाना ख़त्म करने के आधे घंटे के बाद पिएं। गर्मियों में या ज़्यादा प्यास लगने पर थोड़ा सा पानी पिया जा सकता है।

गर्म मिज़ाज वाले खाने से पहले पानी पिएं।

गर्म खाना खाने के फ़ौरन बाद ठंडा पानी पीना नुक़सानदेह है। जो लोग बर्फ़ से ठण्डा किए हुए पानी के आदी हैं वह भी खाने के थोड़ी देर बाद पिएं। फल और हरी सब्ज़ियाँ रोज़ाना इस्तेमाल की जाएं।

ग़िज़ा में तबदीली करते रहना चाहिए। एक ही तरह की ग़िज़ा बराबर न इस्तेमाल की जाए। जैसेः

चावल का बराबर इस्तेमाल जिस्म में fluid को ज़्यादा करता है जिस से भूक की कमी, सुस्ती और कमज़ोरी पैदा होती है।

खट्टी ग़िज़ा की ज़्यादती से जिस्म कमज़ोर हो जाता है और बुढ़ापा जल्द आ जाता है।

मीठी चीज़ों के बराबर इस्तेमाल से मेदा ख़राब और आसाब में कमज़ोरी पैदा होती है।

नमक की ज़्यादती से जिस्म में ख़ुश्की पैदा होती है। इसलिए सेहत व तंदुरुस्ती को बाक़ी रखने के लिए हमारी ग़िज़ा बैलेंस्ड होनी चाहिए।

कुछ ग़िज़ाओं को मिलाकर खाना ठीक नहीं होता क्योंकि इस से सेहत पर असर पड़ता है और कभी-कभी बीमारी भी पैदा हो जाती है। जैसे-

1- चावल और सत्तू

2- तरबूज़ और चावल

3- कल्ले पाए और अंगूर

4- दूध और मछली

5- अनार और हरीसा (गेहूँ का आटा, गोश्त की यख़नी और दूध एक साथ घोटकर तैयार करना)

एक्सर्साइज़

हर आदमी के लिए एक्सर्साइज़ ज़रूरी है ताकि सेहत बाक़ी रहे और जिस्म अच्छी हालत में रहे। एक्सर्साइज़ के दौराने ख़ून में तेज़ी आती है। जो लोग मेहनत का काम करते हैं उनका काम ही उनकी एक्सर्साइज़ है। एक्सर्साइज़ अलग-अलग तरह की हैं जिनसे फ़ाएदा उठाया जा सकता है लेकिन सबसे आसान मोर्निंगवाक है। इसका तरीक़ा यह है कि एक तरफ़ से ज़रा तेज़ चलें और सांस नाक से लें, मुँह बंद रहे। वापसी में आहिस्ता चलें मगर साँस नाक ही से लें। हर रोज़ एक-एक गिनती बढ़ाते जाएं। इतनी वाकिंग करें कि बहुत थकान महसूस हो। वाकिंग एक ऐसी चीज़ है जिसको सभी कर सकते हैं। वाकिंग के लिए लिबास मुनासिब होना चाहिए यानी ढीला और नर्म। ख़ासकर सर्दी के मौसम में लिबास गर्म इस्तेमाल करें। खुली हवा में सैर करें। फ़ासला और तेज़ी आदमी की ज़रूरत, रफ़्तार और सेहत पर डिपेंड करती है। आमतौर पर 40 से 50 मिनट की वाकिंग काफ़ी है। तैरना और घोड़ा सवारी भी बेहतरीन एक्सर्साइज़ है। एक्सर्साइज़ जितनी हल्की हो, अच्छा है।

नींद

एक तय वक़्त पर सोना सेहत के लिए ज़रूरी है। जो एनर्जी मेहनत के दौरान ख़र्च होती है वह नींद के दौरान पूरी हो जाती है। गहरी नींद जिस्म को मुकम्मल आराम पहुँचाती है। अच्छी नींद के लिए ग़िज़ा का हज़म होना भी ज़रूरी है।

नींद का वक़्त

नींद का बेहतरीन वक़्त रात का है। रात में ही मुकम्मल और गहरी नींद ली जा सकती है। रात में जल्दी सोने की और सुबह जल्दी उठने की आदत डालनी चाहिए। दूध पीते बच्चों को ज़्यादा नींद की ज़रूरत होती है मेडिकल साइंस के मुताबिक़ दूध पीते बच्चों को 15 से 20 घंटे सोना चाहिए। कुछ बड़े बच्चों को 10 से 12 घंटे सोना चाहिए और जवान 8 घंटे और बूढ़ों को 6 घंटे या उस से भी कम। ●

रसूल स० का पहला घर

इन्सानी रिश्ते नेचुरल और क़ुदरती होते हैं। इसलिए क़ुरआन की आयतों और रसूले अकरम स० की हदीसों में हर मुस्लिम घराने की बुनियाद आपस में मुहब्बत पर रखी गई है और साथ ही ख़ून के रिश्तों की ज़रूरत पर भी भरपूर ज़ोर दिया गया है। क़ौमें घरों में पलती हैं और समाज घरों से निकलकर ही जन्म लेते हैं। इस तरह फ़्युचर में इन्सान की ज़िन्दगी व मौत के कारनामों के बेहतर से बेहतर होने की बुनियाद पूरी तरह किसी न किसी घर पर ही होती है। जिसका सेंटर माँ-बाप और औलादें होती हैं।

चौदह सौ साल पहले अगर अरब के जाहिलाना और ज़ालिमाना माहौल पर नज़र डालिए तो पता चलता है कि उस वक़्त जोशीले और वह्शी अरब किसी भी इंतेक़ामी कारवाई के तहत अपनी लड़कियों को पैदा होते ही या तो क़त्ल कर देते थे या ज़िंदा दफ़न कर देते थे। इन वाक़िआत से रसूले इस्लाम स० ख़ास तौर से बहुत परेशान रहते थे और अल्लाह से दुआ करते थे कि इस गुमराह क़ौम को इस ज़ुल्म और गुमराही से निकाल दे और इसे सीधा रास्ता दिखा दे।

एक ख़ानदान या एक घर में मर्द की हैसियत अगर यह है कि वह बाप है, शौहर है, बेटा और भाई है तो औरत की हैसियत यह है कि वह किसी की माँ है तो किसी की बीवी, किसी की बेटी और किसी की बहन।

औरत की अलग-अलग हैसियतों के बारे में क्या-क्या हुक्म मिलते हैं, इन अहकाम से उसका क्या मुक़ाम बनता है और उसे क्या-क्या हासिल है। इसे सबसे पहले क़ुरआन और हदीस की रोशनी में समझ लेना ज़रूरी है। क़ुरआन और हदीस से जो उसूल हमें मिलते हैं अगर हम इन्हें भुला दें तो हमारा समाज अख़लाक़ी हैसियत से खोखला हो जाएगा। अख़लाक़ी गिरावटें फैल जाएंगी और सच बात तो यह है कि इन उसूलों के न जानने की वजह से ही आज अख़लाक़ी गिरावट बढ़ती जा रही है। लड़कियों के जहेज़ के ज़हरीले जरासीम मुस्लिम समाज में दाख़िल हो चुके हैं। औरतों पर ज़ुल्म और सख़्तियों के वाक़ेआत बढ़ते ही जा रहे हैं, जो सरासर ख़ुदा व रसूल के अहकाम के ख़िलाफ़ हैं! क्योंकि जहाँ तक दीने इस्लाम का ताल्लुक़ है, इस्लाम ने हर ज़माने और हर मौक़े पर औरतों के साथ नर्मी और नेक सुलूक की तालीम दी है। एक रिवायत है, ''जब किसी के यहाँ लड़की पैदा होती है तो ख़ुदा फ़रिश्तों को भेजता है जो आकर कहते हैं ऐ घर वालो! तुम पर सलामती हो! वह लड़की को अपने परों के साए में ले लेते हैं और उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं कि यह एक कमज़ोर जान है और कमज़ोर जान से पैदा हुई है। जो इसकी निगरानी करेगा ख़ुदा की मदद उसके साथ रहेगी।''

रसूल स० का पहला घर

■ ततहीर ज़हरा

अब से क़रीब पाँच हज़ार साल पहले हज़रत इब्राहीम अ० का नबी की हैसियत से उठना और काबे की तामीर तक पहुँचते-पहुँचते बहुत सी सख़्तियों से गुज़रना...अगर इन मौक़ों पर औरत के रोल को अलग कर दिया जाए या यूँ कहिए कि अगर इन मौक़ों पर हज़रत इब्राहीम को औरत की ज़ात से सपोर्ट न पहुँचाई जाती तो हालात कुछ और ही होते। क्योंकि हज़रत इब्राहीम अल्लाह के भरोसे पर अपनी बीवी और दूध पीते बच्चे को एक बंजर ज़मीन पर छोड़ गए थे। हज़रत हाजरा ने अपने दूध पीते बच्चे के लिए बिलक-बिलक कर दुआएं माँगी और अल्लाह ने माँ की दुआएं क़ुबूल करके अपनी क़ुदरत से पानी का चश्मा जारी कर दिया जिसको आज ज़म-ज़म के नाम से जाना जाता है। और लोग इस पानी से अपनी प्यास बुझाते हैं। इस तरह अल्लाह ने औरत के नेक किरदार को क़यामत तक के लिए बुलंदी अता कर दी।

रसूले इस्लाम स० को अल्लाह ने नुबुव्वत से पहले हज़रत ख़दीजा जैसी ईसार करने वाली

बीवी दी जो औरतों में सबसे पहले इस्लाम लाने वाली हैं।

जब भी रसूल इस्लाम परेशान हो जाते थे, हज़रत ख़दीजा उनको तसल्ली दिया करती थीं। हज़रत खदीजा की वफ़ात के बाद रसूले इस्लाम[स॰] की यह हालत थी कि जब भी उस तरफ़ से गुज़र जाते थे जहाँ वह दफ़न थीं तों वहीं ठहर जाते और खुदा से उनकी बख़्शिश की दुआएं करते वक़्त उनकी आँखों से आँसू बहने लगते थे। खुदावंदे आलम ने अपने रसूल की परेशानी और ज़हमतों का बदला बेटी की सूरत में इस तरह दिया कि जनाबे फ़ातिमा ज़हरा[स॰] को क़यामत तक आने वाली हर नेक औरत का सरदार बना दिया और दुनिया की औरतों की सरदार का ख़िताब दिया। बेटी के लिए ऐसे शौहर को चुना जिसने अपनी ज़िरह बेचकर जहेज़ का इंतेज़ाम किया। ऐसा जहेज़ जिसमे जिन्दगी की ज़रूरतों के लिए थोड़ा बहुत सामान था और इस सामान के साथ अली[अ॰] ने रसूल[स॰] की चहेती बेटी को अपने घर की ज़ीनत बना लिया। जब नूरे रिसालत और नूरे इमामत इकटठा हुए तो अल्लाह ने अपनी रहमतों, बरकतों और नेमतों से इस घर को मालामाल कर दिया। साथ ही इमामत के दो नूरों का इज़ाफ़ा करके क़ुदरत ने दीने इस्लाम की बक़ा और बरतरी का सेहरा इसी घर को सौंप दिया। इस बारे में 'हदीसे किसा' मौजूद है। यह भी ग़ौर करने की बात है कि यह हदीस शुरु हुई रसूले इस्लाम[स॰] से लेकिन इसका ख़ातेमा हुआ जनाबे फ़ातिमा[स॰] की मौजूदगी पर यानी जिब्रईल के सवाल पर कि या अल्लाह! इस चादर में कौन लोग हैं? तो अल्लाह ने जनाबे फ़ातिमा[स॰] की निस्बत से पंजतन के नाम गिनवाए और इस घर के फ़ितरी रिश्तों में भी अहमियत माँ के रिश्तों को ही दी गई और क्यों न दी जाती क्योंकि हज़रत फ़ातिमा[स॰] को 11 इमामों की माँ कहा जाता है।

वाक़िअ-ए-करबला के बेनज़ीर होने की एक अहम वजह यह भी है कि वहाँ वह बाप हो या बेटा, माँ हो या बेटी, भाई हो या बहन सब ने अपने-अपने रिश्तों की लाज रख ली थी। हज़रत अब्बास[अ॰] का नाम लेते ही मुहब्बत, वफ़ादारी और बहादुरी की वह मिसाल सामने आती है जिसकी दूसरी मिसाल इंसानी हिस्ट्री में मिलना मुश्किल बल्कि नामुमकिन है। मोहर्रम सिर्फ़ रोने रुलाने के लिए नहीं आता बल्कि यह दिल हिला देने वाले वाक़िए हमें जितने सबक़ देते हैं उन पर चलते रहने की ज़रूरत है ताकि आज की और आने वाली नस्लें इससे दीनी और दुनियावी फ़ायदा हासिल कर सकें। ●

सच्ची कहानियां

एक मेहमान

■ शहीद मुतहहरी

शाम से एक शख़्स हज या दूसरे किसी काम से मदीने आया। एक दिन अचानक उसकी निगाह एक ऐसे आदमी पर पड़ी जो एक कोने में बैठा हुआ था। वह सोचने लगा कि यह आदमी आख़िर कौन है? क़रीब ही खड़े हुए एक दूसरे शख़्स से उसने पूछा, "क्यों भाई! यह कौन है?" उसने जवाब दिया, "यह हुसैन बिन अली[अ॰] हैं।" अहलेबैत[अ॰] के ख़िलाफ़ बेबुनियाद प्रोपगंडे ने उस शामी के दिलो दिमाग़ को पूरी तरह जकड़ रखा था। इसलिए आपका नाम सुनते ही उसका चेहरा ग़ुस्से की वजह से एकदम लाल हो गया। और उसने कुरबतन इलल्लाह की नियत से इमाम हुसैन[अ॰] को बुरा भला कहना शुरु कर दिया। और गंदे से गंदे अलफ़ाज़ के इस्तेमाल के ज़रिए उसने अपने दिल की भड़ास निकाल ली। इमाम हुसैन[अ॰] उस शख़्स की बातों से क़तई नाराज़ नहीं हुए और बड़ी ख़ुशअख़लाक़ी और मोहब्बत के साथ उसके चेहरे की तरफ़ निगाह उठाते हुए कुरआन की इन आयतों की तिलावत करना शुरु कर दी जिसमें अच्छे अख़लाक़ और माफ़ कर देने की तालीम दी गई है। कुरआनी आयतों की तिलावत के बाद उन्होंने उस शामी से कहा, "हम तुम्हारी हर ख़िदमत और तुम्हारी हर तरह की मदद के लिए तैयार हैं।" इसके बाद उससे पूछा, "क्या तुम शाम से आए हो?" उसने जवाब दिया "हाँ! मैं शाम का रहने वाला हूँ।" इमाम हुसैन[अ॰] ने कहा, "शाम वालों से ऐसे अख़लाक़ का तजुर्बा मुझे है और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि इस बद-अख़लाक़ी और दुश्मनी की वजह क्या है।"

फिर उस से इमाम ने कहा, "क्या इस शहर में मुसाफ़िर हो? अगर तुम्हें कोई ज़रूरत हो तो बताओ, मैं तुम्हारी हर ख़िदमत के लिए हाज़िर हूँ। मैं तुम्हें अपना मेहमान बनाना चाहता हूँ और तुम्हें तोहफ़े वग़ैरा भी देना चाहता हूँ।"

अपनी बेशुमार गालियों के बदले वह शामी एक बहुत बुरे बर्ताव की उम्मीद कर रहा था। उसे यह उम्मीद नहीं थी कि उसकी गुस्ताख़ी और जसारत को बिल्कुल ही नज़रअंदाज़ कर दिया जाएगा। इमाम[अ॰] के अख़लाक़ ने उस के अंदर एक ज़बरदस्त रूहानी बदलाव पैदा कर दिया। और वह बेसाख़्ता कहने लगा, "काश! ज़मीन फट जाए और मैं उसमें समा जाऊँ। ऐ काश! अपनी जिहालत की वजह से मैंने यह गुस्ताख़ी न की होती। इस वक़्त तक मेरी नज़र में हुसैन[अ॰] और उनके बाप से बड़ा मेरा कोई भी दुश्मन नहीं था। और इस वाक़िए के बाद से मेरी नज़रों में हुसैन[अ॰] और उनके वालिद अली[अ॰] से ज़्यादा अज़ीज़ और कोई नहीं है।" ●

मज़हब

नहीं सिखाता

आपस में

बैर रखना

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

یا اباعبدالله الحسین

حسین

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block
REGALIA HEIGHTS
Ahmadabad Palace Road
KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111

मरयम

का एक साल पूरा होने के मौक़े पर

हम आपके घर लेकर आ रहे हैं ख़ूबसूरत और क़ीमती

तोहफ़े

पहला इनाम : उमरा

दूसरा इनाम : फ़्रिज

तीसरा इनाम : माइक्रोवेव

चौथा इनाम : मोबाईल सेट

पांचवां इनाम : डिनर सेट

छटा इनाम : ज्वैलरी

सातवां इनाम : मिक्सर

आठवां इनाम : पंखा

नवां इनाम : लेमन सेट

दसवां इनाम : घड़ी

दिसम्बर 2011 से मरयम में हर महीने एक कूपन छपेगा।
10 कूपन जमा करके मरयम की तरफ़ से दी जाने वाली आख़िरी तारीख़ तक कूपन भेजने वालों में से ड्रॉ के ज़रिए 10 लोगों को सिलेक्ट करके इनाम दिए जाएंगे।
अगर आप मरयम के सब्सक्राईबर नहीं हैं तो जल्दी कीजिए।
खुद भी सब्सक्राईब कीजिए और अपने रिश्तेदारों व दोस्तों को भी सब्सक्राईब कराईए और इस स्कीम से फ़ाएदा उठाने का मौक़ा हाथ से मत जाने दीजिए!

नियम व शर्तें:

1. मरयम में हर महीने अलग-अलग तरह के कूपन छापे जाएंगे। दिसम्बर 2011 से नवम्बर 2012 तक 10 कूपन जमा करके भेजने वालों को ही इस ड्रॉ में शामिल किया जाएगा।
2. मरयम की टीम का फ़ैसला ही आख़िरी होगा और इस बारे में किसी को कोई एतेराज़ का हक़ नहीं होगा।
3. इस सिलसिले में किसी भी तरह की अदालती कार्यवाई सिर्फ़ लखनऊ की अदालत में ही की जा सकेगी।

Contact No.:
+91-522-4009558
+91-9956620017
+91-9892393414 (Mumbai)
maryammonthly@gmail.com